

8/17



2366
ASHA ARCHIVES

पुर्वशिष्यकनउपदेशगम्यादृष्टत्वास्त्रीलाइपत्त्याशत्रुसंगशीतिसंदंशगन्यायंडितमः
निताशिरु॥५॥गुणजनसितशीतिगम्यायडितदेरसितकम्याहावार्तागन्याविशकुली
नसितमित्रतागन्याकहिलेनाशइदेन॥६॥मातियाकामानिससंग-सर्धसंगप्रश्रवा

पुर्वशिष्योपदेशेदृष्टत्वास्त्रीलाइपत्त्याशत्रुसंगशीतिसंदंशगन्यायंडितमः
सीदति॥५॥गुणानिःसहसंयर्कःपंडितैरुदसंकथा॥कलिनःसहमित्र
तंकुर्वाणोवावसीदति॥६॥उभयतांलुतंगानांमय्यानांचदंतिनांमृ॥
स्त्रीणांराजकुलांवाविष्कृतंतिगतायुय॥७॥वेरिणासहविष्कृतस्योन
रःकर्तुमिदुति॥सहृयायेवमंमुपप्रतिःप्रतिबुध्यते॥८॥ ॥ ॥

मासितहातिसंगन्यासिदसितसज्जककुलसितवित्वागन्यामानिसकोआशुस्त्रीरात्रयो
नमिजानु॥७॥वेरिसंगविष्कृतसमनंजोदृश्यागदहतेसकतहसकाधुयामावडीसुत्याः
गवस्याशंसनस्त्रागविविडककुलेगारिथमहापाइदम्॥ ॥ ॥

धन धान को ड योग ग विद्या संग्रह ग द धान दा मा ह लि ना दि ना भा हों ल
जा कहिले न मानु ॥ ६ ॥ गुरु वरो वर श्रु को दु लो को ने प नि है न न जोगु ह सं सा र सं स
इन त रि स क वु र श्रो ता रि दि क न त स म्प र्थ गु रु क न दू लो मान्या प नि शु र क न न न्या

धन धान्य प्र योगे सु विद्या संग्रह ग द धान दा मा ह लि ना दि ना भा हों ल
ज्ञः स धान वे द ॥ २ ॥ न गुरोः स दृ शी मा ता न गुरोः स दृ सः पि ता ॥ र स्तो रे ति
मा हा य वि सं द्रो र सं सा रो द वि दु स्त र म् ॥ १ ॥ मा ता गं गा स मं ती र्थे पि ता पु क
र मे व च ॥ गुरुः के दा र ती र्थे च मा ता गं गा मु सा पु तः ॥ १ ॥ वि श्वं रू पं कु त या
गं रू मा ह प्र त ध लि ना म् ॥ को किल ना नां त्व रू पं ना री रू पं प ति वृ ता ॥ ३

को का र ण य द्दी हो ॥ १ ॥ आ मा गं गा व रो व र ती र्थ क न वा वा वु क र ती र्थ व रो व र क र न मु
र के डा र ती र्थ व रो व र क न मा ता न न्या गं गा उ रो व र मा नु ॥ १ ॥ क रू पी को वि श्व रू प हो
को इ ली को रू प श द्दी हो स्त्री का रू प प ति वृ ता रू प से वा प वि ग र्ति हि हो ॥ १ ॥ १२ ॥ १३ ॥

अपचंगरी वाया अन्न न नी नी यहु छ

विशावरोवर नाइ को हि के न रोग देखि श्रु को शत्रु को हि के न को रावरोवर पिपा रो श्रु को कोः
हि के न देव देखि वलि यो श्रु को को हि के न ॥१३॥ विदेश मा विशा मित्र कुं छ परमा सा सा लि
मित्र कुं छ रोगि मनुष्य का श्रो वी मित्र कुं छ परलो के को मित्र वर्म कुं छ ॥१४॥ छटिया गारे
पक्ष्या को विशा विम कुं छ जे वही कन खा या दो विम कुं छ धरे थरिया रकं गली ला इ विम कुं छ

ननु विशा समो वंशु नव व्या वि समो रिषुः ॥ नवाय न्य सम ले हो नव देवा त्परं वल
म् ॥१३॥ विशा प्र वा सिनो मित्रं ना र्प्या मित्रं यु दे सु व ॥ आ त्वर स्यो यं यं मित्रं धर्म मि
त्रं पर व ॥१४॥ दु रा धिता विमं वि शा श्रु जी गो जो जनं वि ल म् ॥ विमं गो शी द रि ड
स्य दृ द्ध म् त र गी हृ यं म् ॥१५॥ श्रु ना न्या सै हं ता वि शा नि त्प हा सै हं ता स्त्रियः ॥ ऊ
वी र्ये रा रु तं श्रु त्प दो यै हं तो नु यः ॥१६॥ द स्य पु त्रौ न वि द्यो त्पान्न शू रो न न यं

हितः ॥ श्रं ध कार कु लं त स न स व दे व सर्व री ॥१७॥

पु रा की त रुणी ला सा विम कुं छ ॥१४॥ श्रु ना न्या सै हं ता वि शा नि त्प हा सै हं ता स्त्रियः ॥ ऊ
वी र्ये रा रु तं श्रु त्प दो यै हं तो नु यः ॥१६॥ द स्य पु त्रौ न वि द्यो त्पान्न शू रो न न यं
शू रो मं नि के न वु डि म त मा य नि के न र को कु ल वं शु मान म मा को रा नि ज स्तो श्रु धा रो कु तः ॥

॥१३॥

॥१४॥

रात्रिको दीपवत्सुमा हो दिनको दिपवत्सुमा हो नीललोको दीपवत्सुमा हो कुलको दीपवत्सु
पुत्र हो ॥१८॥ जन्माउन्मावत वंश विवाह गरि दिन्वा विवाह पड्याउँ न्या अन्न दिन्वा अन्न प
दिन्वा जन्म दे विरक्षा गन्वा इ यो च जन्मा विना न न्या का हुन ॥१९॥ गुरुकी पत्नी पुमारा
जाकी पत्नी रानी मित्रकी पत्नी आ की लकी माता सासुआ की माता इ पाच जना माता न

सर्वरी दीपक सुन्दर ज्ञाने र विदीपक ॥ चैलो क्यदीपको धर्मः पुपुत्रः कुलदीप
कः ॥२०॥ जनयिता र्वेपनेता को यस्तु विपां प्रथकुति ॥ अन्नदाता प्रयन्ताता पंउने
पितर स्मृताः ॥२१॥ गुरुपत्नी राजपत्नी मित्रपत्नी तथैव च ॥ पत्नी माता स्वमा
ता व पश्येते मातर स्मृताः ॥२२॥ लालयेत्येव व माणि दशवर्षाणि ताउपेत
संप्राप्ते माउ दो वर्ये पुत्र निवसे माचरेत् ॥२३॥ लालना वहुवा दोषा स्ताउ
ना वहुवा गुणा ॥ तस्मा पुत्र वशिष्यं वृताउपेन्न तुलाउपेत ॥२४॥ ॥ ॥

रामः
३

माको हुन ॥२०॥ यावदवर्षसंमलालना गर्नु ॥ ॥ दशवर्षसंमलालना ताउन गर्नु सो क
वर्ष लाग्या य छि पुत्र कन मित्र वरो वर गर्नु ॥२१॥ लालना गर्ना को बडो दोष हु ताउन गर्ना
को बडो गुण हु ॥ स्कारण पुत्र कन शिष्ट कन ताउन गर्नु लालना गर्नु ॥२२॥ ॥

विद्यायर्द्धमनपनिष्ठमन्यासपनिगर्हितबुद्धिमन्नयापनिजान्याहुं हजको यर्द्धम
नपनिष्ठमन्यासपनिगर्हिततवबुद्धिले क्या प्रयोजनहुं ॥२३॥ जान्यामन्नया
ले छोराहरुकननेकशास्त्रमालाहुं न्नीतिजान्याबुद्धिमन्नया लोकले पूजाम

रुच्यया सौम्य दिव्यातां प्रजाया किंप्रयोजनम् ॥ तावन्नौद्यदिनस्यातां प्रजा
 या किंप्रयोजनम् ॥ २३ ॥ पुत्रास्तु विविधैः शास्त्रे निर्घोज्याः सततं बुधैः ॥
 नीतिज्ञा बुद्धिं सम्यन्ना नवं निखलु प्रजिताः ॥ २४ ॥ यठ पुत्र किमा लस्य म
 यठ नास्वा रुक् ॥ यठ न संपूज्यते राजा यठ पुत्र दिने दिने ॥ २५ ॥ युणे पुत्रि
 यतां यत्नः किमा होयेः प्रयोजनम् ॥ विक्रीयते न चंठा निगावः श्रीशिवे

ॐ नू तत्त्वित्तित्तान्याभया शजालेयनिपूजागर्ह नू ॥२३॥ हे पुत्र अश्वत्थी नगर पद्म
 द्यादेखि आरिबोक न्या होला पद्मावदि याजाय निपूजागर्ह नू तस अर्घ्य दिन दिन हे
 पुत्र होय फल निवान कर्म पिले होरा हेरु कन नू ॥२४॥ अरु अंगारु गरिनाद गरी कया
 प्रयोजन ॐ इह ननया की गा इला इगला मारु घं मारु घाले को हिलि दे नू ॥२५॥ ॥

मनुष्य को गहना नया को दू न हो दूय को प्र निगहना गुण हो गुण को य निगहना ज्ञा
न हो ज्ञान को य निगहना क्षमा सहनु हो ॥ २७ ॥ मनुष्य पुत्र हो गुण सोध दूय न रखा
जशील लो ध कुल न साध सिद्धि कुं है न विद्या मात्रे न सुखा न जोग न कर्म न न न धन न
सुखा न न ह न ॥ २८ ॥ गुण न न या दूय न न र्थ कुं शील न न या कुल न न र्थ कुं सिद्धि न

न रस्या न रणां दूयं दूय स्या न रणां गुणाम् ॥ गुण स्या न रणां ज्ञानं ज्ञान स्या
न रणां क्षमा ॥ २७ ॥ गुणं दू कुल मा दूयं शीलं दू कुल मा कुल ॥ सिद्धि दू कु
ल मा विद्यां जोगं दू कुल मा धनं ॥ २८ ॥ अ गुण स्य हतं दूयं अशील स्य हतं कु
लं ॥ अदिष्टा हता विद्या अजोग स्य हतं धनं ॥ २९ ॥ गुणं दूषा यते दूयं शी
लं दूषा यते कुलं म् ॥ सिद्धि दूषा यते विद्या जोगं दूषा यते धनं ॥ ३० ॥ ॥

रामः ॥
४

न न या विद्या न र्थ कुं न जोग न ग न या धन न र्थ कुं ॥ २९ ॥ दूय को शो ना गुण ले कुं कु
ल को शो ना शील ले कुं विद्या को शो ना सिद्धि ले कुं धन को शो ना जोग ले कुं ३०

वेस्तुलमाहाहो रिदिनु विद्याकात्र न्या समाहा होरात्ताइलाउनु येसन को अन्या
समाहा शत्रुलाई दिनु मित्रलाई धर्मकार्यमहालाई दिनु ॥३१॥ उद्योगगन्यालाइ
सुमेस प्रनिवृत्तउद्यो है न उद्योगगदैरह न्यालाइ रसातलप्रनिगहिरो है न शको

सुकले योजयेत्कन्या पुत्रं विद्या योजयेत् ॥ व्यसने योजयेत्कुत्रुं मि
 त्रं धर्मनियोजयेत् ॥ ३१ ॥ नात्स्यं शिखरो मेतर्नातिनिम्नरसा तलं म
 ॥ व्यवसायसहायानां नातिआशमदोदधिः ॥ ३२ ॥ श्लोकेन चतुर्दश
 नया देवैकाश्चरेण च ॥ श्रवण्यदिनसंकुर्याद्दानाध्ययनकर्मनि ॥
 ३३ ॥ योजनानां सहस्राणि वृज्या निष्ठिरीलिकाः ॥ अगदूचै न ते यो पिय
 दमे कं न गच्छति ॥ ३४ ॥

होरोलाग्यायद्विसमुद्रयनिनतरीसकनुहुन॥३२॥ एकश्लोकलेनयापनिआधा
श्लोकलेनयापनिरकयाउलेनयापनीएकश्लोकलेनयापनिनिदानाएकनयनिपदिक
नयनिरुतिलेदिनविताउनुवालीनहुनु॥३३॥ हजारकोसुनयापनिरकोहोरोहिडिरहाउ

धनकमांडं विद्यापदं पर्वतमात्रं दशधर्मगर्दामाहास्त्रीसितरसनावकोकामगर्द
केहिपरिश्रमगर्द सुस्तसुस्तविस्तारसितगर्नुहत्तपत्तनगर्नु ॥३५॥ गुरुकासुसारगः
रिविद्यापदिकं प्रवाधधर्मधननयापंडितयात्याकासंगतलेपनिविद्याजं कुरु ॥

शनैश्चः शनैर्विद्याशनैः पर्वतलंघनम् ॥ शनैर्धर्मश्च कामश्च व्या
यामश्च शनैश्च ॥३५॥ गुरुश्च श्रुमया विद्यायुक्तेन धनेन वा ॥ अ
थवा विद्याया विद्यावतुर्थं नोयत्नयते ॥३६॥ एकाक्षरपदांतरं यो
गुरुनामिमन्यते ॥ त्वान्नयोनिशतंगत्वा चाण्डालेष्वपि जायते ॥३७॥

शमः ॥

५

अथ एकयोक् विद्यादिकन श्रुत्योक् विद्यायापिं कुर्याद्य विद्याया उन्मा
हेन ॥३६॥ एकैश्चरपदा उन्मात्वा लक्ष्यनिजो गुरुन निमानेन तत्तत्त सतयोनि कुरु को गिर्नमे
कन के रिवांगल नै जन्म कुरु ॥३७॥

गुरुके उपाठनलीकन आये पुस्तक हेरि कन माने जो यदुर्ध्व न तो सनाम भये जार को ग
न भया को लीजही सुहाव देन ॥ ३८ ॥ सिधालु मनुष्य को सिध अली न मानु पंडित दुः
मित्र को संग ग्रह गनु रति गुण जो कन कहिले पनिस कि देन दोर ले पनिरु न सक देन

पुस्तक प्रत्ययो धीतं ना धीतं गुरु संनिधौ ॥ न शो न ते सनाम भये जार गन इव
स्त्रियः ॥ ३८ ॥ शिल्पि शील मना लस्यं पंडित्यं मित्र संग्रहः ॥ अदौर हरणी वि
द्या यन्त्रै ते वाक्ष्यो नयः ॥ ३९ ॥ न हि जन्म निजेष्ठ त्वं ज्येष्ठ त्वं गुण उच्यते ॥ गु
ण गुणतरं याति यद्योदधि द्युतं यथा ॥ ४० ॥ किंकुले न विशाले न गुणवान्
जितो नरः ॥ धनुर्वंश विद्युदोपि निर्गुण किं करिष्यति ॥ ४१ ॥

॥ ३९ ॥ जन्म लेजेष्ठ कुं देन गुण लेजेष्ठो कुं देन जन्मो दुःख न दह दही श्रेष्ठ कुं दही न द्याधी उश्रेष्ठ कुं
दुत तत्तै जन्म पही को सव न द्या न न श्रेष्ठ कुं देन ॥ ४० ॥ हलोकल लेखा कुं देन जन्मो गुण कुं देन को
पूजा कुं देन श्रेष्ठ वंश देखि नया को धनु कुत पनितो दोरी न नया को लेखा कुं देन ॥ ४१ ॥ ॥

वडाकुलमाज न्यायनि विद्यान नया शोना केन कुलमाफिकी कुतपनि पंडित नया देवता
लेपनि पूजा गर्दन ॥४२॥ जाहांसंमया रिग या का केन तो हासम हुं गाखो ज कु पारी नर
श्री आया हि दुंगा को काम कु ॥४३॥ गुण नया सर्वत्र पूजा कुं द वावु को ना डे के हिवा हि दे

किंकुलेन विशालेन विद्याहीनं स्तु यो नरः ॥ अकुलीनोपि विद्वांस्तु देवतैरपि
पूज्यते ॥४२॥ नावाथी नजते नावं यावत्पारं न गच्छति ॥ उतीर्णं च गते पारं नो
कायाः किं प्रयोजनम् ॥४३॥ गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते पितृवंशो निरर्थकः ॥ वाः
सुदेवनमस्य न्निवसु देवतते जनाः ॥४४॥ गुणाः कुर्वन्त्या इरत्वं इरे पितृसतां स
तां केतकी गंधमाघ्राय स्वयं गच्छति षट्पदाः ॥४५॥ विद्यात्वं च नृपत्वं च न हि
तुल्यपराक्रमौ ॥ स्वदेशे पूजितो राजा विद्वान्सर्वत्र पूज्यते ॥४६॥ ॥ ॥

नवसुदेक का छोरा केश व पूजा गर्दन व सुदेव ला इको हि पूजे न न ॥४४॥ गुणो जो कुं छडा न
यापनि नजी कि तुल्या उं कु ज स्तै के ट की का गंध ले न मरा खो जि खो जि आ उं कु न ॥४५॥ विद्या
वत्त कु नुर राजा कु नु वरो वर के न राजा आ के देश मा हु लो कु पंडित जो कु न सर्व गे था पूजा गर्दन

रामः

संभ्याकालमं हा एतिद्योक्कग न्या रोगादिदुन्दु न् आहारग न्या रोगलाग्नु मैथुनग न्याः
वज्रतैरिसाहा न्कुरग न्दुन्दु न् शयनग न्या दहिदुन्दु न् यज्या देखिमायु क्षीणा दुन्दु
॥५१॥ वेदवेदका द् अंगजा न्या जय हो मर्द्द रह न्या तत्य र नै आशीर्वाद दिदै रह न्या रत्ता

आहारा न्या यते व्याधि गर्जा न्कुरश्च जायते ॥ अलक्ष्मी कश्च स्वाया च सया इ
द्यादाय कक्षयः ॥५१॥ वेदवेदंग तत्त्वज्ञो जय हो मय शयणाः ॥ आशी
र्वादयरो नित्यं मे वराज्ञः पुरोहितः ॥५२॥ प्राज्ञः स्निग्धो महीपालः शि
वकर्म विवर्जितः ॥ विबुधेषु परित्यागी समो दुःखं समः सुखे ॥५३॥ कु
लशील गुणोपेतः सत्यधर्मपरायणः ॥ प्रवीणः प्रेशलो दक्षो राजा ध्ये दौ

राजा को पुरोहितवा हिदु ॥५२॥ बुद्धिवन्त सुन्दर करे को कूटका मनग न्या दुःख सु
ख वरो वरमा न्या गरिमाय एत विषे दानग न्या शिस्ताला इराजाननु ॥५३॥ केली न
ल्लेयुक्त न्या को गुण वन्त सत्वे माहा धर्म माहा तन यरदु न्या सन वातजा न्या सुन्दर वदत वर
स्वाला इराजा को तन्मी तुल्या ३ नु ॥५४॥

शमः ॥
७

वहुत क्रोध प्रया को घति या व्यसन गन्या वहुत लोनि वात वी वाहन त सक न्या वहुत वांगै का
मगन्या आहाम त्र नदा श्र घ्या लोष वग न्या लाइ सु खिया न तु ल्या उनु ॥ ५५ ॥ आ फनु य हिः
ले को काम मात त्पर दुन्या धैर्य गरिका मगन्या स वै रत्न को परि द्या गन्या पवित्र नै रह न्या

हूरं व्यसनितं लुध मप्र गल्म मना र्जवं ॥ अनाय व्यय कर्त्तारं नाधियत्ये नियोज
येत् ॥ ५५ ॥ मूल वृत्ति हितो धीरः सर्व रत्न परि क्षकः ॥ शुविश्व व्यवसायी च धः
नश्चि क्षो विधीयते ॥ ५६ ॥ आयुर्वेद कृता श्यासः सर्वज्ञः प्रियदर्शनः ॥ आर्य शी
लगुणो ये तरेष वै शो विधीयते ॥ ५७ ॥ पितुः पिता महा दक्षः शास्त्रज्ञो मिष्ट
पावहः ॥ शुविश्वा कठिन श्रेय दक्ष्या का स्पश स्यते ॥ ५८ ॥ ॥ ॥ ॥

रत्ना लाइ धर्म अधिकारी तु ल्या उनु ॥ ५९ ॥ वैद्य शास्त्र माहा वहुतै अ न्या सग न्या को स वै थो कजा
न्या देख दै दु दिव हुत खु सी ला ग्दी व दाम नु ध्य को शी ल शो जा व न्या को रत्ना लाइ वै थ तु ल्या
उनु ॥ ५७ ॥ वावु वरा नु नदा य निजा न्या शास्त्र य निजा न्या भिगो गरिय का उन जा न्या पवित्र सु धर को
मल अंग दुन्या स वै काम मा अर्क ले ननु नय न्या रत्ना क न र मो इ ग न्या तु ल्या उनु ॥ ५८ ॥ ॥ ॥

एकवेरसुन्याकोअर्थसम्पन्न्याचाओगरिलेखन्याशुद्धगरिलेखन्यासवैलिपिज्ञान्यासवैशास्त्र
हेन्याकोएस्तालाइलेखकननुं॥५२॥धौरोअत्रिप्रायलेअनुसारवुज्ज्यावलियोदेखदा
खुसीलागदोनमात्याकोअहंकारननयाकोवज्रतवतुरएस्तालाइद्वारयारदायाननिक

सकहुक्तगृहीतार्थोलघुहस्तोजिताक्षरः॥सर्वशास्त्रसमालोकीएषलेखकउ
च्यते॥५२॥इंगिताकारतत्वज्ञावलवाप्रियदर्शनः॥अप्रमादीसदादक्षप्रतीहा
रसञ्ज्यते॥६०॥समस्तकृतशास्त्रजपंडितश्चजितश्चमः॥धैर्यशौर्यगुणोद्येतः
सेनाध्यक्षोविधीयते॥६१॥समस्तहयशास्त्रज्ञोवाहनैश्वर्यराजितः॥शौर्यवीर्य
गुणोद्येतश्चाध्यक्षोविधीयते॥६२॥मेधावीवाक्यदुप्राज्ञःपरचितोयलक्षकः

॥धीरोयद्योक्तवादीचरएषदूतोविधीयते॥६३॥

॥६०॥सर्वशास्त्रकोमतज्ञान्यापंडितमिहितगर्नसकन्याधैर्यवान्पूरोकोगुणान्याकोएस्तासर्दा
रन्याको॥६१॥सर्वशालिहोत्रज्ञान्याअसवारीकुशलनयाकोशूरोयनियराक्रमीएस्तालाइत
वेलाकोअधिकारिगर्नु॥६२॥एकवेरन्याकोसमुजीरह्याबोलदामाहावतुरएषराइकोयेत
कोकुरायनिजान्यावज्रतधीरजस्ताकोस्ततोबोल्याएस्तालाइदूतउकीलननु॥६३॥ ॥ ॥

रामः॥
७

कोपकोप
राजाकोपनिचाकरकोपनिगुणालक्षणां मनकुं जागरि राजा यनि नराडा रघ निवहकु सोम
कहकु ॥६४॥ ए सै काराणाले वडा कुलीन को संगे दया साधु जन हेतु ग कर्तु रत्ना मो नि सः
पहिले यनि माज माहा यनि श्रंत्य मो हा यनि विड वे लय दैन न ॥६५॥ पंडित हेतु के उस न

पार्थिव स्य व मृत्य स्य व दामि गुणालक्षणां ॥ येन संवर्द्धते राजा ज्ञां डागार सत्त
थे व व ॥६४॥ पंडितेषु गुणा सर्वे मूर्खे दोषास्तु केवलं ॥ तस्मान्मूर्ख स ह
उेषु प्राज्ञ एकः प्रशस्यते ॥६५॥ अतश्च कुलीनानां दया कुर्वन्ति साधवः ॥ आ
दिमया वसानेषु न ते या स्यंति विक्रियां ॥६६॥ प्राज्ञे नियोज्यमानस्तु सन्निपात
स्त्रयो गुणाः ॥ यशः स्वर्ग निवासश्च पुष्कलश्च भनागम ॥६७॥ मूर्खे नियोज्यमा
नस्तु त्रयो दोषा महीयते ॥ अयशश्चार्थनाशश्च नरके पतनं कुरु ॥६८॥ ॥

गुणो दुर्गुण मूर्ख के उस व दोष वै गुण माने कुं न तत्कारण मूर्ख ह जा र न द श जा न्या जो कु मो व
रिया ॥६६॥ जन्मा बुद्धि व न्न कन कामला या य कि राजा कन ती न गुण कुं न यश कुं न स्वर्ग जा नि
कुं न व न य नि धै र मित्त ॥६७॥ मूर्ख लाई ति न उ रा कुं न अ य श कुं न व न को ना श कुं न र क मा हा

॥६८॥ अ य य ई कु ॥६८॥

तस्काश्नराजाले धर्मकर्मधनदंडं उन्नया गुणान्नामनुष्यं लाई काममाला उनु ॥ ६२ ॥ ज्याः
 सुकैकामवाकरहेरुलेवरियाघटियागई ॥ तसैलेराजालाई पापपुण्यवडदड ॥ ७० ॥ ज
 स्त्रोगरिसुनकोपरिष्ठापोलिकनलोहालेहानिकनसीमाहाघसीकनकाटीकेनगरिंह त

तस्माद्भूमिश्चरोनित्यं धर्मकामार्थवृद्धये ॥ गुणवन्नमिं योजे तगुणहीनं वि
 वर्जयेत् ॥ ६२ ॥ यत्किं वित्कुरुते नृत्यः शुभं वायद्विवाशुभं मू ॥ तेन संवर्द्धत राः
 जा सुकृते दुष्टते रधि ॥ ७० ॥ यथा हेमं परीक्षेत ताप्रताडनमेदनेः ॥ तथा युक्त
 धर्मयवकुलशीलनकर्मणा ॥ ७१ ॥ ज्ञातव्या वेदोरो नृन्नावांधवाव्यसना
 गमं ॥ श्रापकालेतथा मित्रं नार्याच विप्रवक्ष्ये ॥ ७२ ॥ ॥ ॥ ॥

शमः ॥

२

स्त्रैगरिमनुष्यलाई कुललेशीललेकर्मलेपनियरिष्ठागर्भरथाहायाहिंद ॥ ७१ ॥ केहिका
 मलाइपठाइकनवाकरकोपरिष्ठागरिज्ञानुश्राकुलाइदुःखयन्यामाहादाजुनाइचिदिं
 न्श्रापनियर्दामाहा मित्रकोयाहाइंदूस्त्रीकोविचारधनसकियापकिजानिं कनिकोननिको
 दुःखयन्यामाविदिंदू ॥ ७२ ॥

चाकरनन्यादेरे प्रकारका कुंदन उत्तममाजा घटिया तीजस्ताला इतत्तौ काम विचारि कार्य
मांला इतु ॥७३॥ वहुत अस्सी सुखाल्या कोधीलोनी अजाया को नमान्या वसनी धूर्त असं
तोषी सेवानगन्या इस्ताला इ राजाले या कर कहिले न राखनु ॥७४॥ अति रिसाहा अति कृपः

ना ४

नृत्यावहु जे या उत्तमाधममधमाः ॥ ते नियो ज्यायद्या योग्यं त्रिविधे धेव कर्म
सु ॥७३॥ अलसं सुखरं करं साधं वासनिनं शठम् ॥ असंतुष्टमनं कृतं न त्यजेद्दुःखं न
राधियः ॥७४॥ त्यजेत्त्वा भिनमत्युग्रं मत्पुत्रं दयाणां ते जेतु ॥ कृपणां दविशेषज्ञ
स्तस्माच्च कृतं शनम् ॥७५॥ वामनार्या सुतो मूर्खः प्रेषको वा विचारकः ॥ निःस्त्रे
हो वंधुवर्गश्च त्यजेदस्य महत्सुखम् ॥७६॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नी इस्ताला भिकन हो इतु कृपणां प्रदाय निगन्या को के हिया हानयां उन्हा ते सै प्रदाय निगन्या को
मिहिनत मां हाषो टला उन्हा इस्ताला इ को डी हानतु ॥७५॥ अजाया को बुरा को डि अर्के यो क काम
गन्या इस्ताला तिला इ मूर्ख को शला इ कुश को विचारगन्या वा कर कनषी तिन नया काश जुना

इला इ इत्यावडो सुख कुं ॥७६॥

कसैकोकोहिमित्रयनिद्वैतकसैको^{पि}याशेयनिकोहिद्वैतकारणोलेमित्रयनिशत्रुयनिहुं
न॥७७॥आफ्नाकामकानिमित्रसेदायनिमनुष्यगर्हणपरमार्थधर्मकानिमित्रकोहि
गर्हणनन्वाकोयनिदूदसकियायहिआफ्नाआमाआइकोडू॥७८॥जुवारिवेसनगः

नकश्चित्कस्यविमित्रंनकश्चित्कस्यवित्थियः॥कारणादेवजायन्तेमित्रा
णिरियावस्तथा॥७७॥कार्यार्थीनजतेलोकोनरोकःपारमार्थिकः॥वत्स
ःक्षीरक्षयंदृष्ट्वापरितेजतिमातरं॥७८॥कुतोव्यसनिनोनिद्राश्रतृप्तस्यकुतो
रतिः॥कुतःसौरव्यंदरिद्रस्यदुर्जनस्यकुतःक्षमा॥७९॥तत्करस्यकुतोमान्या
दुर्जनस्यकुतःक्षमा॥वेश्यास्त्रीणांकुतःस्नेहःकुतःसत्यंवकाभिना॥८०॥दुर्व
लस्यवलाराजावालानांशेदनंवलं॥वलमूर्खस्यमौनत्वंवोरणांमनृतंवलम॥

न्यांकुतनिद्राभोकयनिहुंदैनश्रसंतोमिलाइपीतिहुंदैनदरिद्रिलाइसुखहुंदैनदुर्जनलाइक्ष
माहुंदैन॥७९॥वोरकोमानुकोहिहुंदैनदुर्जनलाइदयाहुंदैनवेश्यास्त्रीलाइपीतिहुंदैनदिना
रकोसावोहुंदैन॥८०॥निर्वलियाकोवलराजाहोवालखरुनैवलहोमूर्खकोनबोलिरुन्याते

हिवलहो॥८१॥

राम
१०

कोहिनकुन्यादरिद्रकोवालखकोहृष्टकोतपस्वीहेतकोअन्यायलेमिवियकामानिसुः
कोरकराजामात्रगतिरुश्रकोहैन॥८२॥रोगिमनुष्यकोधननप्रयाकामनुष्यकोशत्रुः
कोदरलेकंयमानप्रयाकामनुष्यकोहृदयमाशोकलेउद्याकामनुष्यकोश्रोततनन्याको

अनाथानांदरिद्राणांवालवृद्धतपस्विनाम्॥अन्यायपरिभूतानांसर्व
षांपार्थिवोगति॥८२॥बाधितस्यार्थहीनस्यशत्रुमित्रासितस्यव॥हृद
यशोकदग्धस्यसुहृदर्शनमौषधम्॥८३॥आतुरेव्यसनेषाम्प्रेदुर्निश्चैः
शत्रुविग्रहे॥राजद्वारेश्मशानेवायस्त्रिष्टुतिसंबाधवः॥८४॥नावसुद्धिमनु
ष्याणांज्ञातव्यंसर्वकर्मसु॥नावेननुम्यतेकांतानावेनदुहिताननं॥८५॥

सज्जनमित्रकोदर्शनप्रयामाहासंतोषकुंड॥८३॥रोगप्रयामाहाकेहिवडोप्रापन्निषयामा
हादुर्निष्ठप्रयामाहाशत्रुशितजगशययामाराजाकाद्वारमाहाश्मशानमाहाज्ञाआउकुदा
जुभाइतसैलाइप्रनु॥८४॥मानिकोज्यासुकेकाममाहानावनाजस्तोगयोतस्तेकुंडनावनै
मायापपुण्यकुंडस्त्रीकनमालिंगनचुवननिनैनावनालेगरिंरुकोरिकोसुखचुवनकोखमा

॥८५॥
नावनालेगरिंरु॥८५॥

काठमायनिदेवताकै नरुंगामायनिदेवताकै न मायोको मूर्तिमाहायनिदेवताकै न ज्यामाः
हानावनागयोवाहिदेवताकै न सवैदेखिजावैमाह ॥८६॥ शिष्यकोदेवतागुरुहो गुरु
कोदेवताज्ञानस्त्रीकोदेवतागुरुवहो सजलोककोबाह्मणहो ॥८७॥ बाह्मणलाइअः

नदेवोविद्यतेकाष्ठे पाषाणेन वमृन्मये ॥ भावेषु विद्यते देव सस्माद्भावो महो न
रम् ॥८८॥ शिष्याणां देवताचार्यो ज्ञानमाचार्यो देवता ॥ देवतायोषिताभेत्ता
बाह्मणो जनदेवता ॥८९॥ विषयश्च यथावद्विंश्चाचार्यं यश्च देवताम् ॥ घृष्टी
यश्च यथा माता मित्रं यश्च यथा सुतः ॥९०॥ गुरुरग्निर्द्विजातीनां वरुणाणां वाः
स्मरणो गुरुः ॥ पतिरेको गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ॥९१॥

मित्रस्तो देवतु गुरुलाइ देवता जस्तो देवतु आमा लाइ घृष्टी वरो वर देवतु मित्रकनको
राजस्तो देखि पीति गर्व पुत्रलाइ यनि मित्र वरो वर देवतु ॥९२॥ बाह्मणको गुरु अग्निदेव
ताकै न चाखणका गुरु बाह्मणहो स्त्रीको गुरु देवता आहु पुरुषहो सवैको गुरु अतिविश्व

॥९२॥ गुरुः ॥

राम ॥

उत्तमजातिकाघरनीवजातिहोअग्नागतआयायनियध्यायोप्यगरिपूजागर्नुसवेकोअपूर्वीआ
याकोगुरुजस्तोहो॥२०॥देवताकनभक्तिनावनागरिपूजागर्नुवाकरकनकेदिदिकनसन्नोष
गराउनुउयकारगरिकनमूडकोसमानगर्नुवास्त्रणाताइदाउवत्यणामगरिसन्नोषगराः

उत्तमस्यापिवर्णस्यनीचोपिगृहमागतः॥पूजनीयोयद्यान्यायंसर्वस्यान्याग
तोगुरुः॥२०॥देवतापूजयेद्भक्त्याश्रुत्यादानेनपूजयेत्॥श्रद्धःपूजोयकारेणवि
श्वःप्रणतिवन्दनात्॥२१॥धर्मस्यमूलराजानस्तपोमूलं च वास्त्रणाः॥वास्त्रणा
यत्रपूज्यंतेतत्रधर्मःसनातनः॥२२॥आचारात्फलतेधर्मश्चाचारात्फलतेधर्मः॥आ
चारात्फलमाप्नोतिआचारोहृद्यलक्षणा॥२३॥

उनु॥२१॥धर्मकामूलमन्याकोराजाहुनृतपस्याकोमूलमन्यावास्त्रणाहुनृतसूकाराजसूः
ठांउमांवास्त्रणाकोपूजाहुंताहासर्वदाधर्मरहंठनाशहुंदेन॥२२॥आचारदेखिधर्महुं
आचारदेखिधर्मनूपनिहुंआचारगयासर्वकार्यफलहुंआचारलेअलक्षणापजिनाशहुं

त्वान्याकुरामाहाखाननसकन्यासुन्दरस्त्रीसितनोगगर्भसंघतिनैकनदानगर्भनसकनुरति
कुरासानुतयस्यालेकुंदेन॥२४॥वालेखेमाहाधर्मगर्भजीवननन्याकोअनित्यह नरेनोः
लिकहिलेमर्तुछथाहापावनुदेनफलपनिपाक्यापहिअवश्यजहन्तत्तेजिननुक

नोज्यंनोजनशक्तिश्चरतिशक्तिर्वलस्त्रियः॥विनवेदानशक्तिश्चनाल्पस्यत
पसःफलं॥२४॥वालेखेवचरेधर्ममनित्यखलुजीवितंम्॥फलनामपियका
नांशाश्चतंयतनंकुवं॥२५॥सदमस्यहतोधर्मःक्रोधेनैवहृतंतयः॥अदृढः
सहतंजानंप्रमादेनहतंश्रुतम्॥२६॥अदिनामोहतोहोमोहतानुक्तिरसाक्षिकी
॥उपनीव्याहताकन्यास्वार्थ्याकक्रियाहता॥२७॥

रामः॥

१२

प्रनिजानु॥२५॥अहंकारगन्याकोधर्मव्यर्थकन्क्रोधीकोतयस्यागन्याकोव्यर्थकदृष्टि
ननकुन्याकोज्ञानव्यर्थकधूमन्नविमवरनयावेदयज्ञाकोपनिव्यर्थक॥२६॥अग्निपज्व
लितननैहोमगन्याकोव्यर्थकसाक्षिनराखिखायाकोपनिव्यर्थकधनमालवर्द्धलिकन
कन्यादानदियाकोपनिव्यर्थकआफनेनिमित्रमात्रपाकगन्याकोपनिव्यर्थकन्॥२७॥॥

दरिद्रिभयाकोरोगभयाकोबंधनभयाकाकेहिबेसनभयाकोरतिथोकदानभयाकोफल
होतस्कारणदानगदैरहुनु॥१८॥ धानकायपटाजस्तोजनुमाहाकाछिविमिराजस्ता
धर्मनभयाकामनुष्यतस्तेहो॥१९॥ दुर्जनकासंसर्गकाइसाधुकोसंगगररातदिनधर्म

दरिद्र्याधिरुःखनिबंधनव्यसनानिच॥ अशुभःफलमेतानितस्मादानं
विशिष्यते॥२०॥ पुलकाइवधान्येषुषुविकाइजनुषु॥ तादृशास्त्रेमनुष्येषुये
वधर्मवहिःकृता॥२१॥ त्यजदुर्जनसंसर्गजसाधुसमागमम्॥ कुरुपुण्यमहो
रात्रंस्मरनित्यंननित्यतान्॥१००॥ ॥ इति श्रीचानक्यसारसंग्रहेनीतिशतक
समाप्तं॥ ॥ शास्त्रार्थचक्षुषांविद्वानरेन्दोनीतिचक्षुषा॥ वेदार्थचक्षुषावि

याइतरेवार्थचक्षुषा॥१॥

गरधर्मलेपुण्यंहुंछतसमर्थपुण्यगरानित्यजस्तोसंसारनित्यसमुज्ज्वलनिवानक्यत्रापिले
छोराहेतुशिष्यहेतुलाइभदानया॥१००॥ ॥ इति श्रीचानक्यसारसंग्रहेनीतिशतकसमाप्तं॥१॥
पंडितशास्त्रकाश्रंखालेहेर्छन् राजानिकोश्रंखालेहेर्छन् वेदकाश्रयलेबाह्यगाहेर्छन् सतमनु

॥ इति श्रीचानक्यसारसंग्रहेनीतिशतकसमाप्तं॥१॥

वशमनुष्यलाई प्रणाम गरिहात लिनु सूरकन फोरफार गरिहात लिनु लोभी कन धनूदीहा
त लिनु वरोवरी कामनुष्यलाई पराक्रम गरीहात लिनु ॥६॥ आशुहिन्दु अर्काले नजानोसः
पराइकाहिडगोप्य आशुले बुझिराखनु ॥७॥ मनले चितायाको वचन लेखकाशन गर्नु मंत्रे ज

उन्नमः प्रणिपातेन शूरप्रेदेन योजयेत् ॥ लुधमर्थप्रदानेन समंतुल्य पराक्रमैः
: ६ नात्महिंसे परे विद्या हिंसा हिंसे परस्य च ॥ ग्रहे कुर्म इवांगानि परमावच
लक्षयेत् ॥७॥ मनसा चिन्तयेत् कार्यं वचसान प्रकाशयेत् ॥ मंत्रलक्षणा गूढा
त्मा कार्यसिद्धिश्च जायते ॥ उषकार गृहीतेन शत्रुना शत्रुमुद्धरेत् ॥ पादलग्नं कर
स्थेन कंठकेनेय कंठकम् ॥८॥ वहेदमित्रं स्तब्धेन यावत्कालं वियर्षयः ॥ तद्यैव माः
गते काले प्रियादृष्टमिवाश्मनि ॥९॥

स्तोगरिगुप्रगरी कार्यगर्पाको सिद्धिहुन्छ ॥८॥ उषकार गरिशत्रुलाई हातलि कन अर्क शत्रुको का
मगरी दिनु पाउमा बिम्बाको काँठो काँठे लेजीकी आफालु हुन्छ तस्ते ॥९॥ आफ्ना विपतिमाँ हाकाँ
धमाँ हापनि शत्रुलाई चर्काउनु नवकाल आशु न्न नयोत वमरिगायो यानिको हुँगा माँ आफाहि

॥१०॥
॥११॥

हे जिज्ञासितो पिरोक्या न निको मान्द स मधुरका नरवां देन सून निको न वोल् मिठै कुरो
 वोल् हे काल्याणि लोक सवै मधुरै निको मान्द न ॥११॥ जिज्ञाका दुष्या माहा लक्ष्मि वसुदिन जि
 न्नाका मधिवट मितना इव सद्ध न जिज्ञैका मधिवट धन न जिज्ञैका मधिवट मरणा यति कुं

हे जिह्वे कतुकत्ने ह मधुरं किन्न जात्र से ॥ मधुर वदति कल्याणि लोको हि म
 धुर प्रियः ॥११॥ जिह्वाये वसते लक्ष्मी जिह्वाये मित्र वाधवाः ॥ जिह्वाये वं ध
 नं चापि जिह्वाये मरणां कुवं मू ॥१२॥ प्रियवाक्य प्रदाने न सर्वे तुष्यंति जन्तव ॥
 तस्मान्न देव वक्त्रव्यं वचने किन्द रिद्धता ॥१३॥ अग्निदोग रुड श्रैव शस्त्रयाणि र्दनाय
 हः ॥ क्षत्रदाराय हारी च षडे ते श्रातता यिनः ॥१४॥

दुनिश्चय ॥१२॥ मिठो कुरो वोल्माय हि सवै प्रमन्नं कुं न तत्कारण पिपासे लाग्या कुरो वोल्
 नु वचन वोल् दामां हाक्या दरिद्र कुं ॥१३॥ घर माहा आगो सलूका इदिन्या विष खुवा व
 न्या हात मां हा रुतियार लिकन काटून आडं न्या धन हरण गन्या स्त्रिहरण गन्या खेत हर

मिली इश्रातता इन्न प्रबु ॥१४॥
 रामः १४

श्रातताइवेदकापारगयाकोधमापनिआकुलाईमान्यालाईमानुतेसुवधलेवस्महत्यालागैदेन
॥१५॥सत्यधर्ममोहातत्यरनैकनराज्यकोपालनागनुशत्रुलाईजीतिकनप्रजालाइधर्मलेपाः
लनागनु॥१६॥कुलकुल्याकोटिपीकनजरोनउखेलिन्यागरिजस्तोमालिवगैवामाहायकृतसैरा

श्राततायिनमायान्तमपिवेदांगपारगं॥जिघांसंतंजिघांसीयान्नतेनवस्महानवेत्॥
१५॥राष्ट्रंवालयेनित्यंसत्यधर्मपरायणः॥निर्जित्यपरसैन्यानिप्रजाधर्मणपालये
त्॥१६॥पुष्पंपुष्पंविचित्रुयान्मूलकैश्चनकारयेत्॥मालाकारइवागानिप्रयोजानाति
सारतां॥१७॥अरिमित्रमुदासीनमञ्ज्यास्थस्थविरोगुरुः॥योनदुश्चरितिमन्दात्मासर्व
त्रनश्यति॥१८॥अनायव्ययकर्तारश्चनर्थकलहप्रियः॥आतुरेसर्वमस्तीवनरःशीघ्रंविन

जालेयनिप्रजालाइदुःखनदीकनकामकोकरलांउनु॥१७॥मांशत्रुयोनित्रयोउदासीयोमाज्जमा
हूयोबुद्धीयोगुरुननिजोबुद्धदेनलोघटियाबुद्धिनयाकोनासिंह॥१८॥आफनुअमन्दानीनः
आश्रयलोखर्वगर्भाविनाश्रयकलहगर्भाशोगलाग्यामाहासवेद्योख्यान्याएस्त्रोमानिस्वा
देनाशङ्क॥१९॥

कालकौतुककोनदेशहोकाखर्वकुंककाश्रामदानीकुंकमकौनकुंमेरोशक्तिसामर्थ्यकतिको
 छननियोवारंवारचिन्ननागदैरहुनु॥२०॥सिंहदेखिएकगुणवकुलादेखिएकगुणकुकुरादे
 खिबुवगुणकाकदेखियाचगुणगादुदेखितीनगुणएतिसिखनुगुण॥२१॥वहुतकामनया

कःकालःकानिमित्राणि कोदेशःकोव्यायागमैः॥कश्चाहंकाचमेशक्तिरितिचिन्सं
 पुङ्गुमुङ्गुः॥२०॥सिंहादेकंवकादेकंशिंसेन्नत्वारिकुकुटात्॥वायसात्यंचशिंसेन्न
 षट्पुनःस्त्रीणिगर्ह्मात्॥२१॥प्रभूतकार्यमल्पंवायोनरःकनुमिदति॥सर्वारिंनेषु
 तत्कार्यंसिंहादेकंवीर्षियते॥२२॥इंद्रियाणितुसंयम्यवकवत्यंडितानरः॥कार्यः
 कालोपयन्नानिसवकार्यानिसाधयत्॥२३॥प्रायुष्यांनंचयुद्धंवंसंविनागंचवं
 धुषु॥स्त्रियमाक्रम्यनुजीतशिष्यन्नत्वारिकुकुटात्॥२४॥

शमः॥
 १५

शमः॥
 १५

पनिसानुकामनयायनिसवैकार्यमातपरनैकनसिंहकोजस्तोचहयांईगर्नु॥२२॥सवैइडि
 यनचलाइकनवकुलाजहिगरियंडितलेकामैकावेलामांहाकार्यगर्नु॥२३॥विहानैउठन्यायु
 द्गर्नुवंधुवर्गलाइवाडिखानुत्वास्त्रिलाइवलेसितनोगगर्नुएतित्वारकुरोकुकुरादेखिसिखनु॥२४॥

गोप्यगर्मैयुनगर्नुधूर्तकुचुवेला माहाद्यश्चाउनुनमात्रनुविश्वासकसेकोनमानुयतिवो
चकुरोकाकदेखिसिकनु॥२५॥ पायादेखिटेरेखान्या नयायाद्योरेमाहासंतुष्टहोईजान्याद्यो
रेनिडाकुन्याचाईचैतन्यकुन्यात्तामिकोभक्तिराखन्याशूरोपनिकुचुशतिकुकराकुकरदेखिसि

गुरुमैयुनधूर्तत्वकालेवालयसंग्रहः॥अप्रमादमविश्वासंप्रवशिसेवुवायसा
त॥२५॥ वस्त्राशीचाल्यसंतुष्ट सुनिदःशीघ्रचेतनः॥त्वामिभक्तश्चशूरश्चभडेतेश्चा
नतो गुणाः॥२६॥अविश्वांतोवहेद्भारंशीतोसंचनविन्दति॥संतुष्टश्चभवेनित्यंती
तिशिष्टेतगर्हजात॥२७॥विंशत्येतागुणांप्रोक्तायस्तु कुर्याद्विचक्षणः॥सजेय्यति
रिपून्सर्वानजेयश्चभविष्यति॥२८॥मूर्खाणां हिमनुष्याणां मनुसंतप्रचेतसाम्॥

परस्यदयकारेपिपुसांभवतिविग्रहम्॥२९॥

कनु॥२६॥नविज्ञासिभारिवोकनुधिसोतातोयनिनमांनुसर्वदासन्नोभैमानुइतीनकुरादाहकाभा
सिकनु॥२७॥इजोवीसगुणान्याकोजोवतुइतिनदीगर्हसोमनुष्यसर्वेशचुकनजीतीकसेलेन
जीतयनिहुकु॥२८॥रिसलेजसकोविन्नजलदकुइत्तामनुष्यसर्वहेतकोआपसमाहाअलिक

अप्रमादमविश्वासंप्रवशिसेवुवायसा त॥२५॥

जत्काप्रापत्तमाशकमतकेन मिलापयनि केन तत्ताजो कनजसैसमुद्रका तीरमाहारहृन्पादुइ
वुवाएकयेतभयाकाभेसंरागपंश्चिवराशनाशनाकनभयाजस्तोगरिनाशिकुन् ॥३०॥ श्रीकुलाइ
आपन्निपन्यामाहाजस्तासुकेसंगमिलापगर्तुजस्तोपहिले रामजीलेनालुवानरकलसुखा
सितगन्याथ्या ॥३१॥ नतरीसकनुसमुद्रपनिसवैवानरकोवलतान्यायो कहिलेन न प्रोकोश

एकोदरवृष्टग्रीवायेवरन्निमहाएवि ॥ असंधिताविनशंति नेसंदोइवयसिणाः ॥३०॥ वा
सनेसतिकुर्वीतयेनकेनापिसंहतिः ॥ असवानरगोबुद्धेपुरादासरधिंयथा ॥३१॥ दु
स्तरंसारंतीर्णसमग्रंवानरंवलम् ॥ अभूतपूर्वंरामेणसेतुबंधश्चसागरं ॥३२॥ ययंश
तवयंयंचविरोधंवयस्परम् ॥ यैराक्रम्यमाणतुवयंयंचान्नरंशतम् ॥३३॥ हित्वा
जित्वाचकंमार्गिकृत्वावैरमशान्नकम् ॥ जातयःसमंतांयांतियःपरःपरयवसः ॥३४॥

रामः ॥

१६

मजिलेसमुद्रमाहाबुलवांध्याथ्या ॥३२॥ तिमिहुरुशयजनाहोहोमिहुरुपांवजनाहोपरस्यरतिमो
हामोवैरीकृतयनित्रकोशनुआइलाग्यातिमिहामिपांवअधिकसहेहोःननियुधिसिरलेदुर्यो
धनकेउन्नयाकोकयाहाहोकोहो ॥३३॥ आकुकुतिइंइमर्मकोकुरालेकाठीपरस्यरवैरगारि
नमिल्यापनिदाज्युनाईफेरिमिलकन्जोशनुहोउशनुकोशनुहरुआकुकुंदैन ॥३४॥ ॥

मनुष्यको जरो नया को बिना घोरा को जरो नया को मैथुन पुरुष नया स्त्री को जरो नया उद्दी हो
कपरा लाइ घाम ला गया को जरो हो ॥३५॥ मानि सलाई देरे मुसा के रिग न्या बुरो कुंठ न फे न्या घोरा
बुरो कुंठ मैथुन नग न्या स्त्री बाओ बुटी कुंठे घोरा लाई मैथुन गरया बुरो कुंठ ॥३६॥ अर्का को अ

बिना ज्वरो मनुष्या एण मञ्चानां मैथुन ज्वर मू ॥ असौ नायं ज्वर स्त्रीणां वस्त्राणां मा
तयो ज्वरः ॥३५॥ अथा ज्वर मनुष्याणां मनधावा जिनां जरा ॥ अमैथुन जरा स्त्रीनां
मञ्चानां मैथुनं जरा ॥३६॥ कष्टावृत्तिः पराधीनां कष्टं वा सो निराश्रयेः भूतपूर्वार्थ
संयुक्तः सर्वकष्टं दरिद्रता ॥३७॥ अर्थितो व्याधितो मूर्खः प्रवासी घरसेवकः ॥ जीः
वंतो पिमृताः पंच पंचैते दुःख प्राणिनः ॥३८॥

धीन नया को जीउना को उपाय वडो कठिन कुंठ कसै को आश्रय नगरी वा सगनु यनिक कठिन कुं
ठ पहिले तारि वल नया को पछि कंगाल कुनु सबै नन्दा कठिन कुंठ ॥३७॥ सर्वदा माग न्या
ले तगदा गरीया को सर्वदा को रोगि मूर्ख सर्वदा विदेसै रह न्या सदा वाकरी पराश को गन्या एति
पांच जीउ दाह न ता यनि म न्या वरो वर ह न् अनामी न निमनु ॥३८॥

अर्काको घर नित्य जो जां दु नित्य नवो लाई जो भां दु रतिग न्या मानि सु इन्द्र वरो वरु को मनुष्य नया
पनि वहुत पिया रो नया पनिय छि हलु को दुं दु ॥३२॥ अर्काको अन्न खान्या अर्काको वस्त्रः
लाउ न्या अर्को चह्या कुरा मा वस्त्रा परस्त्री गमन गन्या पराई का घर मा हाव सन्या इन्द्र तुल्य

यो यत्र नित्य मायाति बुक्ते चापि दिने दिने ॥ सतत्र लघुतां याति यदि शक्र समो
नरः ॥३३॥ परान्नं परवस्त्रं च परधानं परस्त्रियः ॥ परस्य च गृहे वासः शक्रस्या
पि श्रियं हरेत् ॥४०॥ अशोच्यो निर्द्वन्द्वो विद्वानशोच्यः पुत्रस्य वा नरः ॥ अशोच्यो
विधवानारी पुत्रयोत्र प्रतिष्ठिता ॥४१॥ विभवे सति पूज्यं ते न शशी राणि दे
हितां ॥ बाण्डालोपिनरः श्रेष्ठो यस्यातिविपुलं धनम् ॥४२॥

रामः ॥

१७

नया पनिते ल्कालक्ष्मी को घर ती दुं दु ॥४०॥ धन ननयो को दूत यनियं डित दूत तत्को शोच
नगर्नु पुत्र नया का मनुष्य को यनि शोच नगर्नु को शनाती नया की विधवा दूत यनि लोच
नगर्नु ॥४१॥ धन नया का मनुष्य को सवे जना ले मान गर्नु मनुष्य का शरीर को मान को हि
गर्नु वां डाल दूत यनि जस्को धन वहुत छुडहि मनुष्य सवे वाहि हलु लो दुं दु ॥४२॥ ॥

धर्मनयाकोपनिधनेलेकुं क धनलेसवैको प्रतिष्ठापारी कुं क जो धनी क जिउंदा उने कननंनु
रसलोकमोहाजो निर्वनी क न जिउंदा क न तय निमये वरोवर क न ॥४३॥ वदुतसंघतिन
यापदि उराउनु अलगो मयाकोलो क अति अलगो शिखर मयाकोपवत इन्दुले वज्र

धनमाहुः परं धर्मधने सर्वे प्रतिष्ठिताः ॥ जीवन्निधनि नालोके मृता ये त्वधना
नराः ॥४३॥ अतिसंघटमायने नेतव्यं यतना प्रयं ॥ अत्युच्च शिखरा नूरास
त्यं वज्रेणापातिताः ॥४४॥ कननान्नसको नित्यं कसुखानि वशे गिरां ॥ यस्य
प्राप्योत्पसंतुष्टा कचतस्य सुखं गृहे ॥४५॥ सुनिश्चयं कर्षके नित्यं सुखं नित्य
मशे गिराम् ॥ प्राप्यो न तुर्वशा यस्य तस्य नित्योत्पसंतुष्टं गृहे ॥४६॥

लेहानिकनखसाख्या तस्य अर्घ्यं अलगो यापदि निश्चयं यत्सु ॥४४॥ सवैठो करान्या कन
योखान्या यो न खान्या अनियो विचार कुं दैन सर्वदा शो गिनया कामनुष्य कन सुख कहिले पः
नि कुं दैन जल्की असंतोषी कृतस्का घर सुख कहिले पनि दैन न निजानु ॥४५॥ खेतिगन्या मनु
ष्य कन सदा सुनिश्चयं कुं क नीरो गि मनुष्य कन सदा सुखे क जल्की खान्या आकावसा माहा कृत

का घर निश्चय सवै सुख पति तसे लाइ ॥४६॥

पराईकावसयर्तुसवै नन्दादुःखहो आक्रावससवै नया कसैकोअकसून नयावरोव
रसुखवै न सुखकोरदुःखकोसंक्षयकारणयतिहो न निजानु ॥४७॥ सुखनयावद्वि
दुःखयनिअवश्यदुःखदुःखनयावद्वि सुखयनिअवश्यदुःखदुःख ॥ तत्कारणमहासुख

सर्वपरवर्सेदुःखं सर्वमात्मवसंसुखं मू ॥ एतविद्यात्समासेन लक्षणं सु
खदुखयोः ॥४७॥ सुखस्यानंतरं दुःखं दुःखस्यानंतरं सुखं मू ॥ सुखदुःख
मनुष्यानां चक्रवत्यरिवर्तते ॥४८॥ वदुनिर्मूर्खसंघातैरन्योन्यैः पशुवृत्ति
भिः ॥ आदयंति गुणान् सर्वा न्येद्यैरिव दिवाकरः ॥४९॥ असता सह संगे न को
नयात्यधमा गतिं ॥ ययोपिशो एते नीहस्ते मयमित्यनिधीयते ॥५०॥ ॥

दुःखन्याको पांशाजहि सुमदैरह रुत ॥४८॥ वदुतै सुखहस्तकोसमुदाय नया पसुका
जै हि बुद्धिगन्या काले नलो मनुष्यको गुणयनि मेघले सूर्यालो इहा न्या जं हि रांक रुत
॥४९॥ असज्जन घटिया मनुष्यको संगतले नलो मानिस यनि घटिया बोला उं रु मदेव न्याले ह

॥५०॥
प्रश्नाय निमदितां प्रश्न ॥५०॥

राम
१८

असाधुसितसंसर्गनयाय किं साधुन निश्च साधु कुंठ वाटमों हा म्रं धारो घाम घोर नयाय निवडुतै
देखिं कुं॥ ५१॥ नलासितसंगनया घटियाय निवटिया कुंठ कुलसितउ न्याको तृणनयाको फा
रयनि शिश्माला उंठु॥ ५२॥ नलासितसंगनयाय निस्वजावे कुतै तेन आन्र काफल नीत्रको कोयो

असत्सयर्कदोषेण अधमायांति साधवः॥ मार्गेषु तिमिश्चार्कः समोपिविषमाय
ते॥ ५१॥ उन्नमैः सह संगेन कोनयातिसमुन्नतिं॥ नृणां तृणानि धार्यते प्रथितैः दुसु
मैः सह॥ ५२॥ किं करिष्यति संयर्कः स्वजावोदुरतिक्रमः॥ यस्याम्रफलमध्यस्थ कवा
योनाम्रतांगतः॥ ५३॥ शर्कराशतजारेण मधोनिम्वप्रतिष्ठितम्॥ मधुक्षीरसमावृ
ष्टिनिम्वः किं मधुरायते॥ ५४॥ पुस्तकेषु च याविद्या परहस्तेषु यद्वनम्॥ कार्यकालेः
वसंप्राप्ते न साविद्या न तद्वनम्॥ ५५॥

अमिलोगुलियो कुंठेन॥ ५३॥ त्वोत्सयनारिहालिकन नीचकोफलरोप्याय निमहुदुदसदा किं
कदेरस्यायनि नीचगुलीयो कुंठेन॥ ५४॥ पुस्तकमाहालेख्याको विद्याय राईका हातदिया को
धन कामपरिआयाको वेला माहा त्वोविद्या त्वोभन्यनि निस्फल॥ ५५॥ ॥ ॥ ॥

ताडा नया को मित्र र जीति न नया का भाई कहि लेखा काम या हिय ला केहि पां हि देन माग्या को न
या जस्तो हो ॥ ५६ ॥ वन मां हा को कूल जगन ना का वंधु वर्ग जिना मां हा लेख्यो की स्त्री एति काम
मा हा आउं देन नू ॥ ५७ ॥ बुद्धि लेहि न नया को कर्म लेही न नया को मनुष्य को जीव नु व्यर्थ कृत्
रानि मा हा आहुति हा ल्या जस्तो हो ॥ ५८ ॥ वां का को युद्ध श्री धि को आह पात काल मा हा नया

दूर स्थानि मित्रानि निम्ने होवे ववाधवाः ॥ प्रयोजन किं कर्तव्यं मर्धिते निष्कर्म हीनस्य
लानि च ॥ ५६ ॥ अठव्यां दुमपुत्राणि दूरस्था च ववाधवाः ॥ कांता चालेख्यः
भूता वयः काले नोपतिष्ठति ॥ ५७ ॥ प्रज्ञा वचन हीनश्च यो नरः ॥ निरर्थाश्चैत
ना तस्य नस्मा न्याहुत यो यथा ॥ ५८ ॥ आग युद्धं मित्रा ह्यप्रजाते मेघ इव
रंभू ॥ दयंतोः कलहश्चैव क्षणमात्रं तिष्ठति ॥ ५९ ॥ निष्कला कृपने सेवा निष्क
ला नय वातुरे ॥ दोष संयुक्ता शीलस्य श्रुति विप्रस्य निष्कला ॥ ६० ॥

को मेघ स्त्री पुत्रस्य को कलह इवार कुश एक क्षण य निरह देन नू ॥ ५९ ॥ कृपनी मनुष्यः
को सेवानिष्कल कुरु ले वहुत हृत्पतू ले रति गन्या को रोगी मनुष्य ले स्त्री संग गन्या को शो
ष ले युक्त नया का वाह्मण ले यज्ञा को वेद निष्कल हू ॥ ६० ॥

राम ॥

१८

सुनन जाया को वाकरहेत ननया को घर गोरसन नया को घर नया को बल्पाटो गन्या स्वास्त्री
एक नरक मनुत ही हो ॥६१॥ जान्या ले वडा कुल की कन्या नरा श्री नया पोनि विवहार गर्नु नी
च मनुष्य की रात्री छत यनि न गर्नु विवाह नया चरो वरी मां हा गर्नु ॥६२॥ विषवाट यनि श्रः

अहिरण्यं मदासीकं गृहं गोरसवर्जितम् ॥ प्रतिकूलकलत्रं च नरकस्यापि
रोविधिः ॥६१॥ वर्यकुलजां प्राज्ञो विदूषामपि कन्यकाम् ॥ सुतपिणी न
नीचस्य वैवाह्यं सदृशे कुले ॥६२॥ विवाहस्य मृतं वाह्यं ममैवाहपिकाच
नम् ॥ नीचादप्युन्नमां विद्यां स्त्रीरत्र दुष्कुलादपि ॥६३॥ कस्य दोषं कुलेना
स्ति व्याधिना को नयीति ॥ केन तव्यसनं प्राप्नोति कस्य श्रीश्च निरन्तरम् ॥६४॥

मृतजिकीलिनुन्नयवित्रदेखिपनि सुवर्णलिनु किनु निचमनुष्य देखिपनि उत्तमविद्या
लिनु स्त्रीरत्र जो हून घटिया कुल देखिपनि लिनु ॥६३॥ कस्का कुल मां हा दोष केन रोग ले
कसलाइ पीडा दुंदैत वस न कस ले पाया को छैन एक वेसन सबै काहुं छ संपत्ति सर्व दाक

॥६४॥

दोषयनिगुणयनि केहि नया को कोहि जाणि छैन नवदुत सुन्दर कमल दुत यनि डोंठ माहा
छलेख प्रोडुं ॥ ६५ ॥ शिशिर अतुं माहा आगो अमृत तजस्तो लागू छीर को नोजन पनि अमृत
तजस्तो हो गुणवती खिपनि अमृत तुल्य हो बाल ख को बो लिपनि अमृत तुल्य हो ॥ ६६ ॥
आकृत सल्लत युक्त वाणि अय राध गन्या माहा पनि भाग गन्या प्रनु प्रिय वचन बोल्या त्वास्ति

दोषाय्यस्ति गुणोप्यस्ति निर्गुणोऽपि जंतुषु ॥ सुकुमारस्य पद्मस्य नालो न
वतिकर्कशः ॥ ६५ ॥ अमृतं शिशिरेव क्रि अमृतं क्षीर नोजनं मू ॥ नार्या गुणव
ती वैवस्य मृतं बाल नाधितं मू ॥ दुर्लभा पाकृती वाणी दुर्लभं मू मी प्रभुः ॥
दुर्लभा वसुध नारी दुर्लभं वचनं प्रियः ॥ २७ ॥ नदीनां जाकृती श्रेष्ठानां रीणां न
पतिवृता ॥ मनुष्याणां नृप पादु देशानां यत्र निर्हृतिः ॥ ६८ ॥ पुत्रयोत्र समाकी

रां दासी दासमाकुलं मू ॥ नार्या विरहितं पुंसां यथा रायत द्या गृहं ॥ ६२ ॥
पियारो लाग्या वचन एति दुर्लभं दुर्लभं ॥ ६७ ॥ नदी विषे गंगा मनुष्य माहा राजा त्वि माहा पतिवृ
ता देश मध्य जां हो आक्रामन निश्चल ठे माना नयो अष्ट इन हल लाइननु ॥ ६८ ॥ कोरा नातिकमारा
कमारी वाकर सवै प्रकार ले युक्त नया को छर दुत पनि स्त्री ले रहित दुत जस्तो अराय दुत तै म

राम ॥
॥ २० ॥

कमल

सर्वैरत्नमाहाहूलोरत्नप्रत्यास्त्रीकुन्तसन्निमित्तधनैर्विधेयतिगर्हन्त्वास्त्रीनप्रयाधनकोपनिः
क्याकामद॥७०॥घटियास्त्रीलेकुटुंबकोनाशकुंडकुपुत्रलेकुलकोनाशकुंडकुमंत्रीलेराजाकोः
नाशकुंडवोरलेराजाकोदेशकोनाशकुंड॥७१॥स्त्रीकोदोषहजाररुक्नुगुणप्रत्याघरकोधन

सर्वेषामेवरत्नानांस्त्रीरत्नहिमनुन्नमम्॥तस्मान्नदर्थनिरतास्तयात्यक्ताधनेनकिं
॥७०॥कुस्त्रीहन्तिकुटुंबानि कुपुत्रोहन्त्यतेकुलम्॥कुमंत्रीन्यतेराजाशष्टं वोरैरा
हन्त्यते॥७१॥स्त्रीणांदोषसहस्राणां गुणास्त्रीणिमहीयते॥गृहादारः सुतोत्य
निर्मरणांयतिनासह॥७२॥कवयः किन्नयश्पंति किन्नप्रसंतिवायसाः॥प्रमदाः
किन्नकुर्वन्ति किन्नजल्पन्तिमययाः॥७३॥पुत्रप्रयोजनाचार्यापुत्राः पिंडप्रयोज

नाः॥हितप्रयोजनंमित्रं सर्वमात्मप्रःयोजनम्॥७४॥

गर्नुहोरान्याइदिनु दुःखमोहाश्राक्कापुरुषैसंगरहुशुशतीन् गुणप्रत्याकाकुन्॥७२॥कविजन
शास्त्रकोश्रालेक्यादेखतेनूकागलेक्याखीदेननूस्त्रीहसक्याक्यागर्देननूमयखायाक्याक्याव
कतेननूसवैकुरागर्हन्॥७३॥होरकोनिमित्तस्त्रीवांहिंदुपिंडेलाजनिपुत्रवाहिंदुहितकुरीदे
खाउलाननिमित्तवाहिंदुसर्वप्रकारमाफनेनिमित्तवाहिंदु॥७४॥ ॥ ॥ ॥ ॥

समुद्रलेपृष्ठीवेष्टितकनू पर्वतलेघरवेष्टितकुंडनराजालेदेश।वेष्टितकनूवरित्रलेः
 स्वास्त्रीवेष्टितवेष्टियाकांकन॥७५॥घरलेपनिश्चाकुंदैनवस्त्रलेपनिश्चाकुंदैनपर्व
 रपनिश्चागर्देनदाज्युनाइहेरलेपनिश्चागर्दनसकदेतनूवाधिकनयनिश्चागर्दनसक

समुद्रावरणाभूमिः प्राकारावरणागृहाः॥नरेन्द्रावरणादेशाश्चरित्रावर
 णास्त्रिः॥७५॥नगृहाणिनवासांसिनषकाराश्चरक्षकाः॥नबंधुनैवबंधो
 वास्वशीलाहिकुलस्त्रियः॥७६॥नदीयातयतेकुलंनारीयातयतेकुल
 म्॥नारीनांवनदीनांचत्वकुंदूललितागतिः॥७७॥लंतायाश्चस्थितं
 हंभृत्यप्राश्चस्थितंनृपः॥प्राश्चस्थितंयुक्तंयथोषिष्टेष्टयंतिनसंसयः॥७८
 ॥नैवपश्यतिजातांधःकामान्धो नैवयश्यति॥नयश्यतिमदोन्मत्तोअर्थिदोषं

देननूवाधिकनयनिश्चाकुंदैनस्त्रीकावरीयाशीललेरक्षाकुंद॥७६॥नदीलेतीरषसाउकु
 नस्त्रीलेकुलषसाउकुननदीकोरनारीकोआफ्रासुसिसितहिउन्याकुंदगतिनैहिउकुन॥७७॥ले
 हरालेआफ्रानजीककोहेक्षसमाउकुनराजालेनजीककोसेवकुसमाउकुनस्वास्त्रीनजीकको
 प्ररुषसमाउकुदसमाहासदेहदेन॥७८॥जन्यकोअंधाअहंकारीमदलेमात्याकोधनकुन्याइति

रामः॥

२१

॥७५॥नगृहाणिनवासांसिनषकाराश्चरक्षकाः॥नबंधुनैवबंधो
 वास्वशीलाहिकुलस्त्रियः॥७६॥नदीयातयतेकुलंनारीयातयतेकुल
 म्॥नारीनांवनदीनांचत्वकुंदूललितागतिः॥७७॥लंतायाश्चस्थितं
 हंभृत्यप्राश्चस्थितंनृपः॥प्राश्चस्थितंयुक्तंयथोषिष्टेष्टयंतिनसंसयः॥७८

मनुष्यको अन्न आश्रय को सजां उठु न वइ सगया की स्वास्ती कन सजां उनु सं ग्राम वाट कर्की
आया का स्तराला इस जां उठु न धान धर ल्या या को सजा उनु ॥८०॥ लक्ष्मण ने नया का मनुष्य
छे उ लक्ष्मी हि न ल मां हा सरस्वाती कु पात्र मां हा स्वास्ती र मां उठु न पर्वत मां हा मेघ वर्ष न्छ ॥

जीर्ण मन्त्र प्रसंशति नार्या च गत यौवना मू ॥ रण प्रत्यागतं भूरं सस्यं च गृह मा
गत मू ॥८०॥ लक्ष्मी लक्ष्मण ही ने व कुल ही ने सरस्वति ॥ अथात्रैव मते नीरी गिः
शैव र्षति वारिह ॥८१॥ यस्य नार्या विदूषा नू कश्मली कलह प्रिया ॥ उत्तरोत्तर
वादी च सा जरा न जरा जरा ॥८२॥ यस्य नार्या स्वदूषा च प्रता र्म मनुगा मिनी ॥ नि
त्यं मधुर नार्या च सा प्रिया न प्रिया प्रिया ॥ यस्य नार्या गृहे नित्यं सु नीव प रिः
गर्जति ॥ तस्य सीदंति गात्राणि पद्मिनी वहि माग मे ॥८४॥ ॥ ॥ ॥

स्त्री जस्की न रा श्री मलिन रु कलह गन्या उत्तर पत्तु त रा के ते स ले वु रो मं वु वु रो न या को वु रो न
मं वु ॥८२॥ जस्की स्त्री सु री लो ग न्या को जां उ ग न्या मि थो कु रो वो ल दे त स्की लक्ष्मी ते हि हो
स य न्ति ला इ लक्ष्मी न म नु ॥८३॥ जस्की स्वा स्ति घ र मां हा कु कु नी ज स्तो ग र्जं दे त स्का पु रु ष को श
री र हि उ य र्दा क म लि नी ज स्तो ग रि सु क दे त स्तो ग रि सु क ॥८४॥

नत्कीस्त्रास्त्रीश्रामालेहितगन्याजहिगर्हेतत्कापुरुषकोशरीरशुक्लपद्मकोचन्द्रमावटदा
जहिवररुद्र॥८५॥शोकसंतापदिन्याधैरैकोरात्रयालेकगर्नुकुलकनधामून्योए
कैपुत्रसेतूतत्रयाकोनिको॥८६॥एकैस्त्रीतीनपुत्रदुइहलदशगार्इदुहन्यायछिवाटएक

यस्यनार्यागृहेवैवमातेवहितकारिणी॥वर्द्धनेतस्यगात्राणिपशुपक्षेय
याशशी॥८५॥किंजातैर्वहुभिःपुत्रैःशोकसंतापकारकैः॥वरमेकंकुराल
स्त्रीयत्रविश्राम्यमतेकुलम्॥८६॥एकानार्यात्रयःपुत्रोद्धेलीदधननव
ः॥कन्याकालावसानेननतेयास्यंतिविक्रियां॥८७॥एष्टयावहुवपुत्राययः
कोपिगयांवजेत्॥यजेद्वाश्रममेधेननीलंवावृषसुत्तजेत्॥८८॥एकेनशुक
वृक्षेणदृश्यमानेनवक्रिना॥दृश्यतेतद्वलंसर्वकुपुत्रेणकुलयथा॥८९॥

ल्याजसूकारुद्रयोमनुष्यलाङ्गदोयर्देन॥८७॥पुरुषलेपुत्रधेरुत्पन्नगराडुसवैगः
यामार्गेपिंडनेदियापनिरकश्रवणजालागयानगयाश्रममेधकोपुण्यदुन्यानीलवृः
धात्सर्गतागर्ता॥८८॥एकैसुक्याकावृक्षमाश्रागोलाग्यायद्विसवैवनजस्तेदृष्टकुपु

॥८९॥
रिग
स
॥८९॥

रामः
२२

एके सुदृशका फुल को सुगंधिले सवैवन सुवास कुंकु तस्सै सपुट छोरा ले कुल माय शगर्द यः
 सुरा मां हास नै ह दै न ॥ २० ॥ जत्का पुत्र आका वसामा हा दून वाकर स्त्री मन मां हा को अग्नि
 प्राय जा नि सुसार गर्द नू धन नया प नि न नया प नि स नो ष ग र्द नू तत्का पृथ्वी मा हा स्वर्गः
 ॥ २१ ॥ वावा का व स मां हा जत्का छोरा दून छोरा ति नै लाई मनु ज स ले पा ल ना ग यो वावा

एके न शुक्र वृक्षेण पुष्पिते न सुगंधिना ॥ वास्य ते तदनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा
 ॥ २० ॥ यस्य पुत्रा वशा नृत्या नार्या मृन्दा नुत्ता मिनी ॥ विज वेध पि संतुष्ट स्तर्ग
 तस्य मही तले ॥ २१ ॥ तेषु त्राय पितुर्वश्याः स पिता यस्तु पोषकः ॥ तन्मित्रं य
 त्र विश्वास सा नार्या यत्र निवृत्तः ॥ २२ ॥ यस्मिन् जीवति जीवति प्राप्नुवा श्रुवा
 धवाः ॥ स फलं जीवितं तस्य आत्मार्ये को न जीवति ॥ २३ ॥ स जीवति गुणाय
 स्य यस्य धर्मः स जीवति ॥ गुणाय धर्मं विहीनस्य निष्फलं तस्य जीवितम् ॥ २४ ॥

ते सै लाई मनु विश्वास ज स दे उ गरि क मित्र त सै क न ननु नार्या य नि ज स दे उ आ नु वित्र व स्योः
 उ सै लाई मनु ॥ २२ ॥ ज स ले जि उं हा वा स एण मित्र दा ज्यु ना इ जी उं दून स फल उ सै ले जिया को रु ना
 फलु जी उं नु मो त्र पालि को जि उं दै न ॥ २३ ॥ जत्को गुणाय निरु धर्मा माय निरु जी उं दौ उ सै क न ननु गुण

॥ २० ॥ निष्कल हि न न या को मनुष्य को जीव नु निष्कल ॥ २० ॥

जन्मासुखमांहासस्वतिरुत्तुन्दरीपतिवृत्तात्वात्त्रिजन्माघरमांहादुदानगर्वालक्ष्मीकृतसफलजी
याकोतसैकोदु॥२५॥ जन्ममनुष्यकाधर्मश्रुथकाममोक्षएकथोकपनिदैनतत्योमनुष्यवाचः
राकागलाकोदूडनयजस्तोजीउनुनिर्धुं॥२६॥ सत्यधर्मविहीनमैकनजन्मादिनव्यतीतकुंठन
तत्कोजीयाकोत्वासम्प्रायाकोलोहकाकोषेलोतिजस्तोहो॥२७॥ शत्रुकापनिगुणमनुगुरुकायनि

वाचासुरस्वतीयस्यनाय्यानुपवतीसती॥ लक्ष्मीत्यागवतीयस्यसफलतस्यजीवितम्॥२५॥
धर्मार्थकाममोक्षाणांयस्यैकापिनविद्यते॥ अजागलस्तनस्यैवनिर्धुतस्यजीवितम्॥
२६॥ सत्यधर्मविहीनस्यदिनंयातिवश्रुक्रिया॥ सलोहकारनस्त्रैवश्रुसन्निवसजीवदि॥२७॥
॥ शत्रोरपिगुणावाच्यादोषावाच्यागुरोरपि॥ युक्तियुक्तंवचोप्राप्तंनवचोगुरुगौरवात्
॥२८॥ अकर्तव्यंनकर्तव्यंप्राणैःकंठगतैरपि॥ कर्तव्यंनैवकर्तव्यंप्राणैःकंठगतैरपि॥२९॥

रामः॥

दोषनयाकोमनुयुक्तिलेसहितनयाकोवचनलितुगुरुलेनयाकोननिकोकुरीनयानलितुदोषला २३
नदेन॥२८॥ कंठवाटप्राणजानलाग्यानिनगर्तुकातनुगर्तुप्राणकंठवाटजानलाग्यापनिगः
न्याकामश्रवश्यगर्तुनकोडनु॥२९॥

दुर्जनकासंगतले सुजनयनिमासिंदु जस्तो निर्मलजलहिला लेधमिलो दुंदुतत्ता दुंदु ॥१००॥ खेतिगन्याले
दुमिस्यनिजीतदु गाइया लन्याले अतिथिअन्यागतला इजितदुधनदुन्याले स्त्रीकनजीतदुः वस्त्रवेसुः
याशास्त्रयज्याको प्रया मां हाजीतदु ॥१०१॥ ॥ इति श्रीवानक्यसारसंग्रहे द्वितीयः शतकः समाप्तं १
कालहेरिविचारिशत्रुसंगमिलापयनिगर्तुयर्क समये हेरिमिश्रितजगशयनिगर्तयर्क कार्यकारणको विः

दुर्जनैः सह संगेन सुजनोपिविनश्यंति ॥ प्रसन्नं जलमित्याहुः कर्दमैः कलुषियते ॥१००॥ कृषी
जयति दुर्जिसंगे निरन्यागतोजित ॥ जिता धनवतानारी वस्त्रशास्त्रवता समा ॥१०१॥ ॥ इति
श्रीवानक्यसारसंग्रहे नीतिमारद्वितीयः शतकः समाप्तः ॥२॥ ॥ काले चरिषुणा संधिः का
ले मित्रेण विग्रहः ॥ कार्यकारणमाश्रित्य कालं स्यति यं डित ॥१॥ कालं प्रवति नूतानिकाः
लः संहरते प्रजाः ॥ कालं सुप्ते सुजागर्तिका लोहिदुरतिक्रम ॥२॥ कालात्परो हते बीजं फलं का
लात्प्रवर्तते ॥ कालात्प्रवर्तते सृष्टिः पुनः कालो हि संहरेत् ॥३॥

चारगरिकनजान्यापंडितले समयवित्तोडु ॥१॥ कालजो दुष्टाणी कनयकांडं दुष्ट कालजो दुष्टाणिको सं
हारयनिगर्क प्राणिमुत्या मां हा कालजागदैरहं दुष्ट कालला इकतिगन्यापनिनाघनसकिंदैन ॥२॥ काल
मां हा बीजं चंद्रकालमां हा फलं यनिलागदुष्ट कालतं हसृष्टिदुष्ट दुष्टैरि काले संहारगर्क ॥३॥ ॥

आकाशदिशां भूमिजलवद्भूमासूर्यअग्निवायुओसवैकालैसंहारगर्ह तत्कारणसवैजन्दाहुलोका
लैह ॥४॥ सुन्यामानि सजाहावुज्जदेन ताहावोलन्या कोयनिक्यालागुठु जत्तोनागासन्नासीका
गांउमां हावो विलेक्यागर्ह केहिकामहुदेन ॥५॥ केराकावनमाहाजत्तो आगोकोशकिहराउंठु

खंदिशोभूमिरायश्च वन्द्यार्कानलमासुतौ ॥ सर्वसंहरते काले तस्मात्कालो महत्तरः ॥४॥
किंकरिष्यति वक्ता वञ्चिता यत्र न बुध्यते ॥ नम्रश्च यणकग्रामे रजक किंकरिष्यति ॥५॥
कदलीवनमस्त्यस्यो वरिर्मन्दपराक्रमः ॥ अविवेकजनस्थाने गुणवान्किंकरिष्यति ॥६॥
प्रलये भिन्नमर्यादा भवन्ति किल सागराः ॥ सागरा भेदमिदं ति प्रलये पिनसाधव ॥७॥
मेरुश्चलति कल्पान्ते मर्यादा सागरस्य च ॥ प्रतियन्महासत्त्वानवलंति कदाचन ॥८॥ विष
तेस्त्रीषु च यला विद्यते वास्मणोत्तयः ॥ पारुष्यं विद्यते नीचे दया साधुषु विद्यते ॥९॥ ॥

रामः ॥

तस्मै विवेकन नया कामानि सहेउ गुणिजन हेरुको केहिचल्लेन ॥६॥ प्रलयकालमां हासमुद्रलेप
निमर्यादा छोडुन साधुजनलेकहिलेपनि मर्यादा छोडुन ॥७॥ प्रलयकालका अंतमाहासुमे
रुपर्वतपनी समुद्रको मर्यादा चलहु वडा जनकस्ते आयति मां हापनि चल्लेन ॥८॥ स्वास्नी हेउवं
चलाताहु वास्मणा हेउत्तयशाहु नीचमनुष्य हेउ किचन्या ईहु साधुजन हेउ दयाहु ॥९॥

२४

साधुजनलाईसंमानमात्रगरिकनशरीरमाग्यापनिदिंकुन^{संग}दुर्जनसयउपकारगरीकनयनिआक्र
नहुंदैन॥१०॥जान्यामनुष्यलाईशास्त्रलेबुजाउनसकिंकुनजान्याभूर्खलाईशास्त्रलेबुजा
उनसकिंदैनजस्तोअंधाकाअधीवाटदीयोमाल्यापनिदेखदैन॥११॥कतिसज्जनमनुष्यनरि

साधुःसम्मानमात्रेणजायतेदेहविक्रयी॥उपकारशतेनापिदुजनःकेनगृह्यते॥
॥१०॥बुधबोद्यानिशास्त्राणिनाबुधःशास्त्रबोधयेत्॥प्रत्यक्षेवकृतेदीपेवसुहीः
नोनपश्यते॥११॥नारीकेलसमाकारादृश्यन्तेकेपिसज्जनाः॥अथतुवरदाकाराव
हिरेवमनोहराः॥१२॥चन्दनशीतलचन्द्रचन्दनेनतुचन्द्रमा॥चन्द्रचन्दनयोर्मध्य
साधुःसयर्कशीतलम्॥१३॥अधमाधेनमिदंतिप्रीतिमिदंतिमध्यमाः॥उन्नमामान
मिदंतिमानंहिमहताधनम्॥१४॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यरजस्तावाहिरसाजोप्रित्रनरम्मिथोदुन्दुर्जनजोदुन्वयश्जस्तोवाहिरकवलोरामोत्रिः
हाउजस्तोदुन्दु॥१२॥श्रीखण्डशीतलकचन्द्रमायनिशीतलकलनइहुइमोहाचन्दनशीतलचन्द्र
मारचन्दनप्रदासाधुकोसंगवलुजन्शीतलक॥१३॥अधममनुष्यधनैकोइच्छागर्हन्मध्यमः
मनुष्यप्रीतिकोइच्छागर्हन्उन्नममनुष्यमानकोइच्छागर्हन्वडामनुष्यकोधनमानैहो॥१४॥

माखाघावकोइछागर्कन राजालेधनकोछागर्कन नीचमनुष्यकलहकोइछागर्कन शाः
धुहतशांतिंकोइछागर्कन ॥१५॥ सामान्यमनुष्यलेधनइछागर्कन रानीकन्यानृपकोइ
छागर्कन दायुजाइइष्ट मित्रकुलकोइछागर्कन तपस्वीरुतस्वर्गकोमोक्षकोइछागर्कन

मक्षिकाब्रह्ममिहंतिधनमिहंतिपार्थिवाः ॥ नीचाः कलहमिहंतिशांतिमि
हंतिसाधवः ॥१५॥ इतराश्चरमिहंतिनृपमिहंतिदारिकाः ॥ ज्ञातयंकुलमिहं
तिस्वर्गमिहंतितायसाः ॥१६॥ अतिलेशेनयद्वयमतिलोनेनयत्सुखम् ॥ यर
पीडावयावृत्तिनैवसाधुषुविद्यते ॥१७॥ असक्यं नारयेत्याज्ञो ह्यकार्यनैवका
रयेत् ॥ स्वल्पकार्येनकुर्याच्च निष्फलं नैवसेवयेत् ॥१८॥ शैले शैलेनमानिकां
मौक्तिकं न गजे गजे ॥ साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥१९॥

॥१६॥ अतिदुःखगरिद्वयकमाडनु अतिलो नगरि सुखगर्तुं अर्काला इदुःखदुन्याकुरो येति चार
कुरा साधुजन हरु गदेन ॥१७॥ ज्ञान्नामनुष्य न शक्या कुरो आरंभ गदेन न गन्या कुरो यनि गदे
न साधु कामरके हि फल दुन्या काम यनि गनु ॥१८॥ सवैयवत माहामणि कुंदेन सवै हा भिका
गंडस्थलमा मोठि कुंदेन साधुजन हरु यनि सवै ठांडु देन नृषी खण्ड यनि वन वन महा कुंदेन ॥१९॥

रामः ॥

२५

अर्काको कार्यगर्ग्याश्राप्ताकार्यव्यागर्देन मित्रको काममाहापुण्यहोलाप्रनिगर्तुराजाको कार्यः
गर्दपराक्रमहोलाप्रनिगर्तु ॥२०॥ जलमाहालेख्याको जस्तो मेढिन्यानीचमनुष्यले गर्ग्याको का
महुंछ साधुले गर्ग्याको कामहुंगा माहालेख्या जस्तो हुंछ ॥२१॥ वडामनुष्यलाइ संयन्त्रि श्रेष्ठ

परकार्येषु युक्तात्मा स्वकार्यं किं न साधयेत् ॥ सुहृत्कार्येषु निर्वृत्तिराजकार्येषु
विक्रमं ॥ २० ॥ जललेखेव निवानां यत्कृतं तत्तदृश्यते ॥ अवलालेखेव साधूनीः
शिलालेखेव तिष्ठति ॥ २१ ॥ महाताः मायदः सन्ति महातामेव सम्यदः ॥ इतरे
षु मनुष्येषु नायदो नैव संघदः ॥ २२ ॥ शत्रुस्तुष्यंति चार्केण वस्त्रशेषेण च
दुमाः ॥ विलुप्तः स्मरणमात्रेण महान्नकरसंघटैः ॥ २३ ॥ लेखकः पाठकश्चैः
व येवान्ये शास्त्रचिन्तकाः ॥ सर्वे व्यसनिनो मूढाः क्रियावन्तश्च वण्डिताः ॥ २४ ॥

र्यपनिहुं ह्रापत्रिघनिघर्ह नृशतसानामनुष्यलाईआपत्रिघनिघर्ह नृसंयत्रिघतिहुदै न॥२२॥
 आककापातलेमहादेवसंतुष्टहुं ह्रावस्त्रदानलेचन्द्रमासंतुष्टहुं ह्रास्मरणागनीलेमान्नविष्णुस
 तोषहुं ह्रावदामनुष्यजो ह्राह्रातजो शिवितिगन्यासंतुष्टहुं ह्रा॥२३॥ लेखन्यापोठगन्याशास्त्र
 काचिन्तनागन्या इसवैद्यसनमन्या मूर्खमूर्खहुं ह्राक्रियाकर्मगन्याजो ह्रासोयंडितउमैहुं ह्रा॥२४॥

अहान्नकोवेपारघोराकोवेपारराजाकोसेवाकितयस्याएतिवारकुरावगेधैर्यदुन्यामानिसंग
ईनकोतरमानिसुजोहृन्त्वेतिगन्यागाइनेसीवकाइजीउयालुद्धन॥२५॥वनतुल्याउन्नया
मनुष्यलेवेपारगर्तुविद्याधीमनुष्यलेधैर्यपक्षाडन्याकेउजोतुरेयईछोराहुउन्नन्यामनु
ष्यलेस्त्रीरजस्वलाभैस्नानगन्यापदिजोरदिनवारिसंजोगगर्तुमानकाइछागन्यालेराजाकोसे

वैदित्र्यमश्रवाणिज्यंराजसेवातपोवनम्॥धीराश्रत्वारिकुर्वन्ति कातराःकृषिवा
हकाः॥२५॥वृजेद्धनार्थीवाणिज्यंविद्यार्थीचवहुश्रुतम्॥अतुकोलमयत्यार्थी
मानार्थीनृपतिंवृजेत्॥२६॥सुखंयश्मदलाकारंवावाचन्दनशीतलम्॥हृदयः
कविसंयुक्तंत्रिविधंभूतलक्षणम्॥२७॥दुर्जनःप्रियवादिचनेवविश्वासकार
णम्॥मधुसूदतिजिह्वायेरुदिहलाललविषः॥२८॥

वनगर्तु॥२६॥सुखजोहृकमलकाफूलकार्यजस्तोकोमलवचननन्याश्रीखंडवन्दनजस्तोशी
तलहृदयमाहाकरतिराव्याजस्तोएतोतीनर्थकभूतकोलक्षणकुद्ध॥२७॥वहुतपियारोला
न्यावचनमात्रसर्वदाबोलन्यादुर्जनहोननिजानुतसुखेउविश्वासनकरहुजिह्वाकाश्रयिवाटः
महजस्तोबुहोवक्कहृदयमाहाकेवलविषकुद्धतत्कारणदुर्जनसितपीतिनगर्तु॥२८॥

रामः॥
२६

दुर्जनमनुष्यजो कनू पराइ को हि दुसर्सि उजत्राय नि देखु कनू आकाशोष हि दुवेला जत्रा आकाशा देः
 ख्याय नि नख्या के गरि रहं ॥२२॥ वहुत सुन्दर नया का मुख गुण न नया का धनि जो कनू टाटा बाट दे
 खता पलास को फुल फुला जला दुन फल के हि काम को दुंदैत ॥२३॥ मुख जो कनू तनू के न जान्या ले
 को इनु वार पाउका न नयाय नि प्रत्यक्ष दुइ पाउ को पशु होत नि जातु वचनै को कांछा ले घो व कनू दे

खलः सख्यमात्राणि परहि दाणि यश्यति ॥ आत्मनो विलम्बमात्राणि पश्यन्नयिनय
 श्यति ॥२४॥ दर्शनीयां श्रुयन्मूर्खा धनवन्तश्च निर्गुणाः ॥ इरस्था एव दृश्यंते किं शुका इ
 व पुष्पिताः ॥२५॥ मूर्खो हि परिरुर्तव्य प्रत्यक्षो हि यदोः पशुः निश्चये वाक्यशाल्येन च
 दृष्टः कंठको यथा ॥२६॥ सख्यः क्रूरः खरः क्रूरः सख्यात्क्रूरतरः खलः ॥ मंत्रोषधिवश्च
 : सख्यः खलः केनोपशाम्यति ॥२७॥ हस्तिहस्तसहस्रेण शतहस्ते वाजिनः ॥ शृंगिनो द
 शहस्ते न देशत्यागे न दुर्जनः ॥२८॥

ख्या को कांछा जला जि कनू य नि दुंदैत ॥२९॥ सख्यपनी को धी दुंद खल दुष्ट य नि को धी दुंद कनू सख्यनः
 न्याय नि खल जन जनू क्रूर दुंदे क्या नि मित्र नया मंत्र ले ओषधिले विष जान दुंद दुष्ट जन को के
 हि ओषधि देन ॥३०॥ हाति देखि हजारा हात टाटा रहनु घोरा देखि सय हात ताटा रहनु सिकु नया को
 देखि दश हात परै रहनु दुर्जन देखि देश छोडनु नया को दस मां हांस देखे न न निवान कयत्रा वि

हानिलाई अंकुशलेव सागर्तु घोरावनको दालेव शागर्तु सिङ्गुन्या लाइला ठालेव शागर्तु खड्ग हा
थमाहा लिकन दुर्जन कनव शागर्तु ॥ ३४ ॥ शास्त्र पञ्चाको दूतयेनि दुर्जन देखि उरै मानु पछु मणिले
भूषित रात्रो मया पनिसर्य देखि उरै मानु पछु तत्तो दुर्जन होन निजानु ॥ ३५ ॥ सुपात्र रकुपात्र काभ

हस्तिनो कुश हस्तेन कश हस्तेन वाजिनः ॥ मृगील गुड हस्तेन खड्ग हस्तेन दुर्जनः ॥
३४ ॥ दुर्जनः परिहर्तव्यः शास्त्रेणालं कृतो पिसन ॥ मणिनालं कृतः सर्यः किमसौ
नमयंकरः ॥ ३५ ॥ पात्रायात्र विशेषेण धेनुयन्नगयो यथा ॥ तृणान्निःस्रवते ह्यी
रं ह्यीरान्निःस्रवते विप्रमू ॥ ३६ ॥ सुदशनुचमत्वेति नोपेक्षेत कदाचन ॥ काहे दुर्जनमा
यांति तृणस्यं वक्रिबीजवत् ॥ ३७ ॥ षष्ठिः केरके दोषा अशीतिर्मधुपिङ्गले ॥ शतं का
लोवयोडेचकुञ्जस्यां तनविद्यते ॥ ३८ ॥

रामः ॥

३७

दलेगाइ देखि दूर आउकु सर्य देखि विखनिस कंकु घासमाई दूद दूद दानदी विष्मनिस कंकु ॥ ३६ ॥ श
नुशातु कुननिहेलानगर्तु नकोउनु समयमाहाय रालको आगो जहि वरु ॥ ३७ ॥ डेहा डेउ साठी दोष
जंकुन केला सम्राखागर्तु डेउ अशी दोष कुन राय दोष काना डेउ कुन खोरंदा डेउ कुन
कुजामनुय डेउ रति दोष निसकु कुन ॥ ३८ ॥

गाउकोखेडिकपटिसितघटियाआचारगन्यासितनितकोप्रीतिनगनुविश्वासगन्याकाममांहानाशकुं
रु॥३२॥कवलालेकंवलाकनयनिनाशगईनसाज्जकनयनिकवलालेनाशगईकोमललेनगरी
सकनुकेहिछैनतसमर्थतीछोषनिकंवलेकुं॥४०॥वनकोउद्यालोलेतयकासवैयातपोल्यायनिजु

स्थानकूटेदुराचारेमैत्रीस्नेहंपरित्यजेत्॥विश्वाससमयेकार्यविनाशमुपगच्छति॥
॥३२॥मृदुनैवमृदुहृन्निमृदुनारुन्निदारुणम्॥नासाधंमृदुनाकिंचित्तस्मात्तादात
रोमृदुः॥४०॥वनेप्रज्वलितोवक्रिर्दक्षमूलानिरक्षति॥समूलमुन्मूलयतिआपोऽयमृदुः
शीतलं॥४१॥स्थूलरोमावलीवर्द्धःकन्याववकुजाधिणी॥उषराणिचक्षत्राणिदूरतःप
रहस्यमेदयेष्मन्प्रदोषानुकीर्तनम्॥कलहप्रकृतिवैवदूरतःपरिवर्जयेत्॥४३॥

सालाद्रपोलदैतरयद्विपल्लाइजांरुपातिकवलोलोसोकुंरुतयनिवारिआउदाजरैसुधाउखेलिनाशगई
॥४१॥ठुलालामारौःकुन्यागोतवकुतैवोलन्याकन्यावकुतैरुखोउखरभूमिइतितीनथोकठाडैकोइनुसंगरु
नगनु॥४२॥एकातकाकुराफेलावगनुपरार्कोबुकलीगनुपरार्कोदोषदेखांउनुभनुकलहगन्यावणि
इतिकुरादेविठादैरहुनु॥४३॥

प्रोगकोसवारीगन्यामात्याकोहाटीकोनजीकजानुतकालप्रसूतीनयाकीगारभ्रतःपुरकीखास्त्रीए
तिदेविगदैरहुनुनजीककहिलेयनिनजानु॥४४॥दुर्जनमनुष्यकनसदाविगारकोकुरोगन्याभ्रमित्र
कनघरपुत्रवसितप्रीतिगन्यास्त्रीकनबुरागाईगोरकनपुरानावस्त्रएतिकनसंग्रहनगनु॥४५॥

अश्वयानंगजंमत्रं गावश्चैवप्रसूतिकाः॥तद्यावांतःपुरीदासीदूरतःय
रिवर्जयेत्॥४४॥दुर्जनवसदामित्रं परस्वामिरताःस्त्रियः॥गोजीर्णवस्त्रजी
र्णवदूरतःपरिवर्जयेत्॥४५॥नविश्वसेदमित्रेषुमित्रवापिनविश्वसेत्॥कदावितु
यितोमित्रसर्वगुण्यं प्रकाशयेत्॥४६॥नविश्वसेदविश्वस्त्रेविश्वस्त्रेनातिविश्वसे
त्॥विश्वासाद्भयमुपनमूलोदेवनिहंतति॥४७॥

शत्रुशंगविश्वासनगनुमित्रहेउयनिविश्वासगन्याकुरोमात्रविश्वासगनुकदावितमित्रको
यज्यासवैगुण्यकुरोयनिप्रकाशगर्ला॥४६॥विश्वासनराखन्याहेउविश्वासनगनुविश्वा
सगन्यामानिसूहेउयनिश्रुतिविश्वासनगनुविश्वासगन्याकोमानिसदेविजयाकानयले

॥४॥
॥४॥
॥४॥
॥४॥

रामः
२४

नदीको नङ्गराज्याको सिङ्गुन्याको हातमा हा शत्रु उजाया का मनुष्यको स्त्रीको राजाका कुल
को विश्वास नगर्नु ॥ ४८ ॥ नदीका तीरका वृक्षको हिम्राश्रय ननयाकी स्त्री आकुमायीको हिमा
नु मनुष्य ननयाको राजा यति धेरै रहैं ननचाँदै नष्ट हुन्छन् ॥ ४९ ॥ परसंमयीति रहो मन्त्रः

नदीनांच नखीनांच मृंगीणां शत्रुपानिनाम् ॥ विश्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीपुराज
कुलेषु च ॥ ४८ ॥ नदीतीरेषु ये वृक्षानारीच निराश्रया ॥ सामांतरहितो राजानम
वत्ति विरायुषः ॥ ४९ ॥ यदीहै साश्रुतिपीतिं त्रीणि तन्न नकारयेत् ॥ घृतमर्थपयो
गं च यरोक्षेदारदर्शनम् ॥ ५० ॥ नगके दुष्ट विश्वासं न कुर्यात् कुलविग्रहम् ॥ आत्मनोपि
तथा क्रोधं विप्रैर्वैरनकारयेत् ॥ ५१ ॥ कुनयमं त्रिराजानं विप्रं च वृषलीयति म् ॥ प्रवा
जिनं वृत्तं वृष्टं न सेवन्ति सदा बुधाः ॥ ५२ ॥

आमनुष्यलेतीनूथोकनगर्नु जुवानखेलनुधनूलिन्दिनुयनिनगर्नु एकान्तमास्त्रीसितनवः
सुनु ॥ ५० ॥ दुष्टसित विश्वासनगर्नु कुललेजगरावनिनगर्नु आकुलेयनि क्रोधनगर्नु ब्राह्मण
सितवैरियनिनगर्नु ॥ ५१ ॥ अन्यामगन्यामंत्रिकोय निराजाकोय निशूडीनिकोयतिनयाकोवा
स्त्रावत वृष्टनयाकोसंन्यासीकनजान्यापडितहेरुसंगतगर्दै नन् ॥ ५२ ॥

घटिया मित्र के उ विद्या सरह दैन घटि स्त्री तित पीति कुं दैन घटि थारा जामा हा स्थिति सुख कुं दैन घ
टिया देश माहा जी वनु गा जो कुं क ॥ ५३ ॥ वो र के उ सत्य कुं दैन शु डिणी का यति के उ शु वि कुं दैन
मद्य पान गन्या के उ मित्र तार हं दैन जु बा खेल न्या के उ तीन थोक कुं दैन ॥ ५४ ॥ जान्या मनुष्य ले उ

कु मित्रे नास्ति विश्वासं कु नार्या यां कु तो रतिः ॥ कुरा ज्ये निर्वृति नास्ति कु देशे नास्ति जी
वनम् ॥ ५३ ॥ नास्ति सत्यं सदा वो रे न शो वं व घली य तो ॥ मद्य पे सौ ह दं नास्ति शू त
कालं त्रयं न हि ॥ ५४ ॥ विष यो विष म म्यो अ द म्य तो गु र शिष्य यो ॥ अत रे नै व गं त्रः
व्यं ह र स्य वृ ष न स्य च ॥ ५५ ॥ लो क या त्रो न यं ल ज्ञा दा स्त्री एषा त्या ग शी ल ता ॥ पंचः
यत्र न विद्यंते न कुर्या तत्र संगतिः ॥ ५६ ॥ नो जनं शु क्त तां यो ति न वै क ल्यं व द्नु श्रु तम् ॥ न नाः
ही स्थि र बुद्धिः स्या न्न मूर्खः सं स्मृतं व दे त् ॥ ५७ ॥

श्वा स्रणा का मा ज वा ट वा स्रणा का र म्नि का मा ज वा ट स्त्री पुरु ष का म ध्य वा ट प नि न जा नु ॥ ५५ ॥ इष्ट मि हि
त्र का ष र जा नु म्रो उ नु ड र न या ल ज्ञा न यो वा नु र्य न यो र ति यो व थो क जा हा के न तां हा वा स न ग र्नु ॥ ५६ ॥
मा ज ल क टि ग न्या य नि से तो कुं दैन व द्नु त य ज्ञा को द य टी कुं दैन स्त्री को स्थि र बुद्धि कुं दैन मूर्ख मनु ष्य सं

॥ ५७ ॥

राम
२८

आराकोशेष अग्निकोशेष बाधिकोशेष राश्याकेरि नरु तस अर्थ निःशेषगर्नु ॥ ५८ ॥ किंकिप्रयोः
कलहमयो कराडनुमयो मययानगर्नु परस्त्रीमोग निडाप्रयो मैथुनप्रयो आलस्य एति थोकजति
गन्धोमन्वदृक् ॥ ५९ ॥ पराइकीस्त्रि पराइकोधन पराइकोठहा गुरुकाअधिवाटहास्य एति यत्नगरि

आराशेषोमिशेषश्च बाधिशेषस्तथैव च ॥ पुनर्वर्द्धयते यस्मान्न तस्माद्वेशं न कारयेत् ॥
५८ ॥ उद्देगः कलहः कडूयूतमशं परस्त्रियः ॥ निडा मैथुनमालस्यं सेवते वहि वर्द्धते ॥ ५९ ॥
॥ परराशय परस्वंच परिवादं परस्य च ॥ परिहास्यं गुरुस्थाने यत्नतः परिवर्जयेत् ॥ ६० ॥ परो
सेकार्यहर्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ॥ वर्जयता दशमित्रं विषकुं प्रययो मुखं मू ॥ ६१ ॥ कुदेशं
च कुट्टिच कुजाया कुनदी तथा ॥ कुचं च कुमोज्यं च वर्जयेत्यंतिः सदा ॥ ६२ ॥ उर्वशी यदि नृ
पेण रंजायदिति लोन्नमा ॥ गोपाली मेनका चैव वर्जनीयाः परस्त्रिय ॥ ६३ ॥

कोडनु ॥ ६० ॥ आक्राकंटापरिकुरीहा निदिन्यासुख्यां जिखुसामतगर्न्या एतो विषका घडाका मुखमोहादृक्
हाल्याजस्तामित्रकनकोडनु ॥ ६१ ॥ घटियादेश घटिया उद्यम घटियात्वास्त्री घटियानदी घटिया अन्न एति
थोकजान्वाले सडा कोडनु ॥ ६२ ॥ सौन्दर्यले उर्वशी रंजातिलोन्नमा गोपाली मेनका अमराजस्तानयाप

परस्त्रीकोवर्जनगर्नु ॥ ६३ ॥

जो कार्य माहाद्वेषवदुतगर्नयन्यां चो गोविफलजुन्याद्विषयिपरिगयापनिवदुतैषवर्गनयन्यां कः
 एत्ताकुराजान्यामनुचलेहोइकुर॥६४॥ गोमनुचश्रापुहोकिविरातुहोकि सामान्यहोयोपनिविवा
 रगर्तुयोकार्यगर्न्याहोयोकार्यगर्न्याहोइनयोकार्यगर्न्यापनिनगर्न्यापनिवरोवरदुन्याएस्तोपः

येषु कायेषु विद्वेषः सहसा विफलोदयः॥ विषयिषु महादानं परिवर्जं दिवसरात्राः
 ६४॥ प्रक्ता प्रक्तं समं यशेत्कार्या कार्यवतुल्यतां॥ सदा कार्येषु सन्देहो नेतव्यं सर्वदा वु
 धैः॥६५॥ नेतव्यं मकुलीनानां राजसेवोपजीविनाम्॥ नेतव्यं ज्ञानशत्रूणां कृतपूर्वोप
 कारिणाम्॥६६॥ यादयानां प्रययानः पद्मानां शिशिरं प्रयम्॥ पर्वतानां प्रयं वज्राजं तू
 नां द्विषदो प्रयम्॥६७॥ माता यदि विषं दद्यात्पिता विक्रीयते सुतं॥ राजा करोति चान्या
 यं को मेन्नाता न विध्यति॥६८॥

रामः॥
 ३०

निविचारगर्तुकार्यमाहासदासन्देहैरावतुज्ज्ञान्यादेखिसदाउराउनु॥६५॥ अकुलीलमनुष्यदेखिः
 राजाकोसेवागर्न्यादेखिजान्याशत्रुदेखिप्रसूकोश्राकुलेअधिअपकारगर्न्याकोइतहस्तदेखिउरा
 उनु॥६६॥ तपकोप्रयवतासुकु कमलकोप्रयतुसारोकुयवतकोप्रयवजुकुसवेजंतुकोप्रयमनुच
 कुर॥६७॥ आभालेविषदियादेखिवातुलेहोरावेन्या॥ जालेअन्यायगर्न्यामेरोरक्षाकसैलेगरेनम

॥६५॥
 ॥६६॥
 ॥६७॥

जौ न देश माराजा आये चोरक मंत्रिय निपुरो हित यनि चोरक नू तां हा के हिगर्न स किं दैन जस देखि र
साहु न्या हो ॥ ७० ॥ देखि नय नया कसै को के हिला गू दैन ॥ ७१ ॥ बुझाले लेखा को ललाट को अक्षर ॥
को यक्ति श्रृंखलै यनि मेठिकन अर्को थोक फेरिले बिस कहै नन ॥ ७२ ॥ कर्म को मुख्य प्रधान हुना ले

यत्र राजा स्वयं चोरः समन्त्री सपुरो हितः ॥ तत्राहं किं करिष्यामि यतो रक्षा ततो नयम् ॥
७३ ॥ विधाता लिखिता यस्य ललाटाक्षरमालिका ॥ दैवोपि न हि शक्नोति संलिख्यति
खितुं पुनः ॥ ७४ ॥ कर्मणा हि प्रधानेन बुद्धिर्ना किं प्रयोजनं ॥ या ध्यानस्य कुतो बुद्धि
स्तेन देवो न विष्यति ॥ ७५ ॥ कर्मणो हि प्रधानेन सन्निकृष्टे शुभग्रहे ॥ वशिष्ठ दत्तलः
नेपि ज्ञानकीदुःखमागिनी ॥ ७६ ॥ सा नु कूले न वेत्त सिद्धौ घोषिगुणसंहतिः ॥ गुणो
यगुणा तां यांति वक्त्री नूते विधातरि ॥ ७७ ॥

बुद्धि को प्रयोजन को हि दैन के हि बुद्धि नहु न्याहुं गाला इ देवता न निपूजा गर्वन तस अर्थ कर्म हू लो
क ॥ ७८ ॥ कर्म मालेखा को हुना ले वशिष्ठ अखिले हेन्या को लगन माहा विवाह नयो तय नि सीता लो
इ दुःख को नोग गर्न यन्यो ॥ ७९ ॥ देव स यक्ष नया माहा दोष यणि गुणो होइ जां दु देव विषय सज दुं
गुण यनि दोष होइ जां दु न तस अर्थ या स वै विधाता ले लेखा को अवस्य दुं ॥ ८० ॥

जान्यामनुष्यकोपनिकेहिचलदेनश्राक्काकर्मलेगलहनालायायदिवहुधासवमनुष्यकोजलो
 कर्मपूर्वजन्मगन्याकोहुहुउसैमाफिकबुद्धिहुहु॥७४॥हातकोगहनानन्याकोदानहोगलाकोग
 हनानन्यासत्यदोलनुतेहिहोकानकोगहनानन्यावेदांतपुराणहेरुसुनुतेहिहोअसगहनाले
 क्यागनुहु॥७५॥त्वास्त्रिकोगहनानन्याददियावरित्रतेहिहोरुषकोगहनाकलेहोपुसवको

किं करोति नरः प्राज्ञः प्रेर्यमाणः स्वकर्मभिः॥ प्रायेण हि मनुष्याणां बुद्धिः कर्मानुसा
 रिति॥७४॥हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कंठस्य भूषणं॥श्रुतं च भूषणं कर्णं भूषणं किं
 प्रयोजनम्॥७५॥वरित्रं भूषणं स्त्रीणां दुर्माणां पुण्यं भूषणम्॥सुवृत्तिर्भूषणं पु
 सांशीलं सर्वस्य भूषणम्॥७६॥नक्षत्रं भूषणं वदो नारीणां भूषणं यतिः॥पृथि
 वी भूषणं राजाशीलं सर्वस्य भूषणम्॥७७॥महत्पश्चिन्नं वंशं न नीचात्मानं पुनः
 म॥कंसारिवरणाघाते कोलीयस्य विभूषणं॥७८॥

गहनाददिया कर्म हो सवैको गहनाशील हो॥७६॥नाराको गहनाचन्द्रमाहुन॥स्त्रीको गहनाउ
 रुषे हो पृथिवीको गहना राजा हो सवैको गहना नन्या जलोत्तम हो॥७७॥वडामनुष्य देखिअ
 यमाननयाको वरनिको घटिया मनुष्य दाठमानयायाको पनितनिको कंसकाशनु श्रीकृष्ण लेया
 उलेहान्याको पनिका विनागको गहना जयो॥७८॥

रामः॥

३१

संतोष ३

भूमिमाहागयाको जलवगि सुदुंरु स्त्री सुमा वरा राजा संतोष भयाको बाह्य एवेद पञ्चा
को पवित्र सुदुंरु ॥७२॥ घटि पावस्तु ले लि प्र नया को जल छोडि अन्यत्र भूमि को जल
शुचि कर ॥८०॥ खरानी ले माजी का सो सुदुंरु अमिलो ले माया ता वो सुदुंरु र

शुचि भूमि गत तोयं शुचि नारी पतिव्रता ॥ शुचि ह मा करो राजा संतोष बाह्य
रा शुचिः ॥७२॥ शुचि भूमि गत तोयं यत्र लोपो न विद्यते ॥ लेपस्थानं परित्यः
ज्य अन्यस्थाने शुचिः शुचि ॥८०॥ न स्य ना शुच्य ते का स्यंता म म ह न शुच्यति ॥
रजसा शुच्य ते नारी नदी वेगे न शुच्यति ॥८१॥ पितु रन्तुः पुरंदया त्मा तु र्दयान्म
हान सम ॥ गोषु वा त्मे समं दया त्वय मेव कृषिं भुजेत् ॥८२॥ कपिला क्षीरघाने
न बाह्य एगी गमने न च ॥ वेदाक्षर विचारेण शैशू जी नरकं भुजेत् ॥८३॥ ॥

जस्य लाने कन स्त्री सुदुंरु नदी जो कन वगी कन सुदुंरु ॥८१॥ बावा कन अन्नः पुरदीनु मह
तारिकन बाक गनी दिनु गाई की रक्षा मर्न गोठ मां आषु वरो वर को ला उनु व्य ति न न्या आये जाई ता
की ती गन्या मान दुंरु अर्का का नरय न्या दुंरु देन ॥८२॥ कपिला गाई को दूद खाया देखि बाह्य एगी गमन

देखि बाह्य एगी गमन

बाह्यगालेशूडीणि का हातवाटय कैमहिना समवाया लोभू देवरोवरजी उनज्याल कुं
मन्यापछि कुं कुं ॥८४॥ स्त्री को विद्वज्जना दूदतनया की स्वास्त्री घी उननया की
नोजन कपशाननै कन लाया का गहना विद्याननया को बाह्यगालेशो जा छैन ॥८५॥ कमः
ललेजल को शोभा कुं जानित पस्या प्रया को बाह्यगालेशो जा पाउं सुख मनुष्य को संया

शूडी हस्ते मयो पुं के मास मे कं निरं नरम् ॥ जीवमानो न वे कु डो मृतः श्वानश्च
जायते ॥८४॥ स्नानहीना च यानारी घृतहीनं तु भोजनम् ॥ वस्त्रहीनं मलं कारं वि
द्याहीनो द्विजो यथा ॥८५॥ शोभते सलिलं यद्यं शोभते हि यतो द्विजः ॥ शोभते त
पसा युक्तो वृणं मूरस्य शोभते ॥८६॥ यज्ञोत्सवं च विद्याणां मूर्त्तीणां कलहात्स
वम् ॥ पुरुषोत्सवं च गारीनां गवां च तृणसुत्सवम् ॥८७॥ अग्निहोत्रफला देवाः
शीले हवि फलं मृतम् ॥ रतिपुत्रफलानारी दत्तपुत्रफलं वनम् ॥८८॥ ॥ ॥

ममांघ्रा उला ग्या को तसु ले शोभा कुं ॥८६॥ बाह्यगालेशो यज्ञगर्शखु सुकुं न सुख हेत कल है
गर्शखु शी कुं न स्वास्त्रि जो कुं न पुरुष वै देखी खु सो कुं न गाइ जो कुं न घासू वे स प्रया खु सी कुं
न ॥८७॥ अग्निहोत्र वेद को फल कुं न शास्त्र को फल शील वही या कुं न स्त्री संयोग गरि पुत्र

राम ३२
उद्यनगरी उद्यनगरी उद्यनगरी

चारसमुद्रसंमृष्टीकोदानगयाकोरमासुनकायाकोवरोदःपुण्यकृतनियं डितहृतलेन
याकोक ॥२४॥ आगोयानिखात्रीमूर्खमनुष्यसर्वजगत्ताराकाकुलरतिकथोककोसदा
सर्वदानजीकेनईकनरह्यातकालप्राणलिनवेरगर्देनम् ॥२५॥ साजीमासुसाजीछीउवाः

वतुसागरपर्यन्तायोदयात्पृथिवीमिमां ॥ नखादेव्यापियामांसंतुल्यमेत
दिवुर्वधां ॥२४॥ अद्रिपथःस्त्रियोमूर्खासर्वराजकुलानिव ॥ नित्यमेवोयवा
रेणप्रयःप्राणहराणिषट् ॥२५॥ सद्योमांसघृतसद्योवालास्त्रीक्षीरभोज
नं ॥ उल्लोदकतृकायासद्यःप्राणकराणिषट् ॥२६॥ अनादष्टगुणं पिष्टं पि
ष्टादष्टगुणं धयः ॥ पचमोष्टगुणं मांसं मांसोदष्टगुणं घृतम् ॥२७॥ ॥

रामः ॥
३३

सुन्दरीस्त्रीस्त्रीरकोभोजनतातोयानिहृक्षकोकमाएतिकथोकलेतत्सणमाहावल्गशाउ
क ॥२६॥ अन्ननदाआठगुणापीठोलेपीठोजडायाठगुणादुदलेदुदनाआठगुणमासुले
मासुनदाआठगुणापीठोलेवल्गवल्ग ॥२७॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥